SHRI V. K. DHAGE: There is another Bill on the Agenda.

MR. CHAIRMAN: He has said that he is not moving it.

THE PUNISHMENT FOR MOLESTATION OF WOMEN BILL, 1958

SHRIMATI SAVITRY DEVI NIGAM (Uttar Pradesh): Sir, I beg to move:

> "That the Bill to provide for punishment of persons guilty of molesting women be taken into consideration."

सभापति महोदय, सदन के सम्मुख किसी विधेयक को लाने के अनेक उद्देश्य होते हैं, इस विधेयक को मैं इसलिये नहीं लाई कि मुझे बिल ड्राफ्ट करने का या कानूनी बातों का बहुत कुछ ज्ञान है, किन्तु एक समाज सेविका के नाते मैंने यह अनुभव किया कि आज कल दिल्ली और तमाम बड़े बड़े शहरों में गुंडागर्दी, किडनैपिंग इंसल्टिंग और मोलस्टेशन के केसेज बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं और यह एक बहुत चिन्ता की बात है ।

आज इस बीसवी सदी में भी कालेज में पढ़ने वाली लड़किया और आफिस में काम करने वाली स्त्रिया स्वतंत्रतापूर्वक विचरण करने में अपने को सुरक्षित अनुभव न कर सकें, यह देश के लिये और हमारे लिये बड़ी ही अशोभनीय और ग्लानि की बात है । यदि हम पिछले सालों की फिगर्स देखें--उन केसेज के फिगर्स जो कि सिर्फ कोर्ट में लाये गये--तो हमको एक प्रकार से बड़ा आश्चर्य होता है । सन् १९५४-५५ और १९५५-५६ में एसे जितने केसेज कोर्टस में ट्राई किये गये और पुलिस में रिपोर्ट हुए, उनसे १९५६-५७ में उनकी संख्या लगभग दुगुनी हो गई है । ऐसे करुणाजनक मामले हमारे सामने, विशेष रूप से समाज सेवियों के सामने उपस्थित होते है जिनमें बेचारी लड़कियों के अभिभावक न तो इतना पैसा ही रखते हैं कि वे कोर्ट में जा सकें; वे तमाम अदालती कार्यवाही के लिये न तो इतना पैसा दे सकते है और न इतना समय दे सकते है । इनके अतिरिक्त वे लड़कियां हैं जिनके पिता या अभिभावक पैसा रखते है और कोर्ट में भी जा सकते है लेकिन वे बदनामी, शर्म और समाज के डर से बिलकुल छिपा कर रह जाते है, और इसके बाद वे लड़कियां है जिनके घर वाले सशक्त हैं, सम्पन्न हैं, समाज से भी इतना नही डरते है और समाज सेवियों की मदद से अदालतों में मामला ले जाते हैं लेकिन उनमें भी होता यह है कि महीनों की लम्बी प्रोसीडिंग्स के बाद, बड़ी कार्यवाहियों के बाद, वकीलों के तमाम चक्करों में फंसने के बाद भी ७५ या ७६ फीसदी केसेज में ये कलप्रिट बिल्कुल छूट जाते है और वे बेचारी लड़कियां इंसल्टेड हो कर, तरह तरह के कटु और परेशानी में डालने वाले अनुभवों के बाद, फिर ज्यों की त्यों वापिस आ जाती है । एक तो दुगुनी इंसल्ट और बदनामी हुई, दूसरे तमाम खर्चा और परेशानी हुई और फिर तीसरा उसका नतीजा यह होता है कि वे गुडे लोग, जो कि इस तरह की गुंडागर्दी में फंसे हैं और उनका यह एक व्यवसाय सा बन गया है, वे बड़े आनन्द से निकल कर यह चैलेंज करते हैं कि अभी तो हमने यह किया है लेकिन अब उन सब लोगों के परिवारों में भी इसी तरह हमला करेंगे जिन्होंने कि गवाही दी है और इस प्रकार के चैलेंजेज हमको रोज देखने और सुनने को मिलते है । श्रीमन्, अदालतों में भी वातावरण इतना विचित्र रहता है कि पढी लिखी और ऊंचे परिवार की लड़कियो को भी इतना साहस नही होता है कि वे वहा कभी जायें । एक मामूली सा पेशकार, एक मामूली सा चपरासी तक उस बेचारी भले और अच्छे परिवार की लडकी के चरित्र पर शक करता है । जो भी सुनता है और देखता है वही यह सोचता है कि लड़की का कुछ न कुछ कसूर जरूर होगा । इसलिये मै ने यह उचित समझा है कि जो ऐसे लोग है, जो इस प्रकार की गुंडागर्दी में फंसे हैं,

[श्रीमती सावित्री निगम]

उनके लिये सख्त से सख्त सजा रखी जाये । जहां तक इस का प्रश्न है कि सजा कितनी हो, तो यह तो मैजिस्ट्रेट पर या जज पर निर्भर होगा कि वह जुर्म को देख कर उसके अनुसार सजा दे । यह आवश्यक नही है कि चूंकि मैंने १५ साल रखा है इसलिये एक मामूली सी इंसल्ट करने के जुर्म में भी उसे १५ साल की सजा हो जायेगी । यह जो १५ साल की अवधि और १० हजार का जुर्माना मैंने रखा है उसके पीछे भी एक बड़ा रहस्य है । यह इतनी बड़ी सजाये सिर्फ उनके लिये है जो कि ट्रैफिकर्स है, जो कि वीमेन और चिल्ड्रेन में ट्रैफिकिंग करते है या जो आर्गनाइज्ड ढंग से ब्राथल्स चलाते है और जिनके अन्दर प्राविशियल गैंग्स काम करते है । ये सजाये सिर्फ उनके लिये है । श्रीमन्, मैंने देखा, संसद् के कई सदस्यों ने मुझ से बाहर लाबी में बातें की है और कहा है कि ये सजायें बहुत लम्बी है । मै बिल्कुल मानती हूं, मैं उनसे सहमत हूं । वैसे मै अनेक बार अपने विचार प्रकट कर चुकी हूं कि मै पीनल एडमिनिस्ट्रेशन में विश्वास ही नही करती, मै चाहती हूं कि यह सब करेक्शनल एडमिनिस्ट्रेशन बन जाये। मै तो यहा तक जाने को तैयार हूं। मेरे हृदय में भी उन सब अपराधियों के प्रति वैसी ही ममता और सहानुभूति है जैसी कि किसी भी समझदार व्यक्ति के हृदय मे हो सकती है, लेकिन जब तक कानून है, दंड विधान है, तब तक ऐसे समाज-विरोधी तत्वों को, ऐसे लोगों को जो कि मानवता का अपमान करते हैं, जो कि अपने को इतना गिरा लेते है कि आदमी के शरीर में ही दानव बन जाते है, उनको सजा देने में हमें हिचकिचाना नहीं चाहिये । जब हम पीनल एडमिनिस्ट्रेशन को बिल्कुल खत्म कर दें तब तो ठीक है लेकिन जब तक देश में पीनल एडमिनिस्ट्रेशन है, तब तक ऐसे लोगों को अवश्य ही कठिन से कठिन और कठोर से कठोर सजा मिलनी चाहिये ।

जब इस तरह के केसेज बहुत बढ़े तब हमारे पास यहां के विशिष्ट अधिकारियों से पत्र भी आये कि कुछ न कुछ महिलाय, बहनें, इस दिशा में कुछ काम करें । हम लोगों ने यहा के तमाम पुलिस अधिकारियों की, कुछ बड़े बड़े एडमिनिस्ट्रेटिव अधिकारियों की तथा तमाम इम्पार्टेंट समाज-सेवियों की एक सभा बुलाई और उसमें हम लोगों ने बैठ कर घंटों बातचीत की । जब एडमिनिस्ट्रेटिव सेक्टर के लोगों से और पुलिस अधिकारियों से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हम खुद चाहते हैं कि यह चीज खत्म हो। हमें मालूम है कि गुडागर्दी बेहद बढ़ रही है, दिन दहाड़े, तीन चार पांच बजे शाम को जब स्कूलों से लड़कियां लौटती है तो बराबर इस तरह के केसेज हमें रिपोर्ट होते है, लेकिन हम मजबूर है और मजबूरी का कारण उन्होंने यह बताया कि जो क्रिमिनल प्रोसीजर कोड है वह इतनी दूर तक नही जाता है कि ऐसे मामलों में भी जब तक कि पूरी तरह से गवाही न हो, जब तक कि पूरी तरह से मुकदमे लड़ने वाले न हों, तब तक उन लोगो को हम पकड़ सकें, इसलिये कानून में सुधार आना चाहिये । श्रीमन्, उन्हीं बातों को सुन कर मैं इस नतीजे पर पहुंची कि इस बात की आवश्यकता जरूर है कि कोई नया कानूनी सुधार लाया जाये जिसके मातहत ऐसे गलत काम करने वाले गुन्डा प्रवृत्ति के लोगों को किसी तरह रोका जा सके । इसी प्रकार, वहां यह भी चर्चा हुई कि ला आफ ऐविडेंस इतना विस्तृत है कि उसमें से ९९ फीसदी लोग ऐसे मामलों में छट जाते हैं । जिनको कि पुलिस वाले जानते है, लोग जानते है कि यह आदमी गुनहगार है, वे भी ला आफ ऐविडेंस के विस्तृत स्कोप के कारण बिल्कुल छूट जाते हैं । मेरा मतलब यह नही है कि मै ला आफ एविडेंस को किसी तरह से क्रिटिसाइज करना चाहती हूं बल्कि मै यह कहना चाहती हूं कि समाज में लोगों में इतना साहस नहीं है कि अच्छे और ईमानदार लोग जाकर गवाही दे सकें । लोग अपनी आंखों के सामने

देखते हैं लेकिन कुछ नहीं करते । एक बार मेरे सामने भी ऐसा मामला हुआ। मैं ने वहां पर जो लोग थे, उनसे कहा कि तुम लोग गवाही दो लेकिन सब के सब अपनी जान छुड़ा कर भागने लगे और कहने लगे कि हमने किसी को देखा ही नहीं। खैर, उसी वक्त पुलिस आ गई लेकिन अधिकतर आदमियों ने केवल इसलिये कि गवाही के चक्कर में न फंसना पड़े और लम्बे प्रोसीजर में न फंसना पड़े, इंकार कर दिया । और खास तौर से ऐसे नाजुक मामलों में जहां कि चारित्रिक पतन का या जहां किडनेपिंग या इसल्टिंग या मोलेस्टेशन का मामला होता है और उसमें लोग भी गवाही नही देना चाहते है। जहां तमाम समाज में लोगो में इतनी दृढ़ता नही है और न इतना एजुकेशन है कि एक सामाजिक काम के लिये उतना कष्ट उठाना स्वीकार करें, उनमें ला आफ ऐविडेंस का जो रोल होता है, वह उन गुंडों को बचाने के लिए बहुत दूर तक जाता है । इसलिए, श्रीमन्,मैने यह सोचा कि इस प्रकार का विधेयक आये । मैं यह नहीं कहती कि मेरे जो विचार हैं वे बिलकुल सही विचार है । मुमकिन है, संसद् के अन्य सदस्य मेरे प्रस्ताव में संशोधन करना चाहें या उस पर नये विचार प्रकट करेंगे, तो मुझे उनसे भी एक शक्ति मिलेगी । मेरा तो केवल उद्देश्य यह है कि इस प्रकार की चर्चा हो और इस प्रकार क समस्या की ओर सरकार जागरूक हो और साथ ही साथ हमारे संसद् सदस्य भी इस दिशा में सोचें और उसके बाद अगर वास्तव में इस विधेयक को पास करने की जरूरत हुई अथवा इसमें दूसरी तमाम कमियों और कमजोरियों को पूरा करने की जरूरत हुई, तो उन्हें डिपुटी होम मिनिस्टर महोदया स्वीकार करें, और अगर यह विधेयक दूर तक जाने वाला नहीं है और उन कानूनी खामियों को पूरा करने वाला नही है, तो उस दशा में, श्रीमन् ,वे कोई न कोई ऐसा विधेयक लायें जिससे इस समस्या को दूर करने की पूरी पूरी गुंजाइश हो जाये और पूरी पूरी एक शक्ति सरकार के हाथ में, एक बल पुलिस के हाथ में आ जाये ।

श्रीमन्, इस समस्या को हम तीन भागों मे विभाजित कर सकते है । पहली समस्या वह है जिसको हम लोकल गुंडागर्दी कह सकते है । दूसरी समस्या, जो कि गुंडागर्दी का हिस्सा है, वह है : Inter-provincial gang of traffickers and brothel-keepers. और श्रीमन्, जो तीसरी समस्या है, वह है सिनेमा और रोमांटिक हारर । जो बिगड़े हुए, मनचले, भावुक नवयुवक है और उनके साथ, श्रीमन्, मुझे भी बहुत बड़ी सहानुभूति है । बेचारे बच्चे, नवयुवक बिना कुछ समझे हुए, आगा पीछा देखे हुए, भावुकता में पड़कर रोमांटिक सिनेमा को देखकर और हारर कामिक को पढ़कर अपने को स्वयं वे एक तरह नायक मान बैठते है और उनके हृदय में स्त्री का स्वरूप माता के समान या बहिन के समान नही रह जाता और वे समझते है कि स्त्री का नायिका का रूप है । इसी के कारण वे गलत और अनुचित काम कर बैठते हैं । मुझे उनके साथ स्वयं इतनी सहानुभूति है जितनी कि संसद् के अन्य किसी सदस्य या बाहर के लोगों को होगी । लेकिन, श्रीमन्, मै इस बात को अनुचित समझती हूं कि उस सहानुभति के कारण हम अपने हृदय में इतना साफ्ट कार्नर बना दें कि हम इस गुंडागर्दी की समस्या को जो कि समाज में एक विकराल तांडव मचा रही है, उसकी भी अवहेलना कर दें । अभी दो, एक दिन मे मैने चर्चा सुनी कि "हम एक ऐसा विधेयक लायेंगे, जिससे प्रोटेक्शन दिया जाये मेन को—आदमियों को" । जब संसद् के जिम्मेदार सदस्यों में यह मनोवृत्ति है, तो फिर हम नवयुवकों की बात नही कह सकते । लेकिन मै जानती हू कि जिन संसद् सदस्यो में यह मनोवृत्ति है उसका एक कारण है—क्योंकि उनके हृदय में इस प्रकार के नवयुवकों के लिए बड़ी सहानुभूति है । इसीलिए वे सोचते है कि इस प्रकार के नवयुवकों के लिए किसी न किसी तरह का प्रोटेक्शन मिलना चाहिये ।

SHRI H. P. SAKSENA (Uttar Pradesh): It is a baseless charge.

श्रीमती सावित्री निगम : मैं यह कहना चाहती थी कि अभी भी जहां ऐसे नवयुवकों को या विद्यार्थियों को सुधारने का प्रश्न है, वह प्रश्न बिल्कुल एक दूसरा ही प्रश्न है और उस के लिये हम लोगों को यह आवश्यक नहीं है कि कोई कानूनी कार्यवाही करें और उन को दंडित करें। हम स्कूलों में धार्मिक शिक्षा और नैतिक शिक्षा के द्वारा अपने नवयुवकों के चरित्र को ऊंचा उठा सकते हैं। लेकिन यह बात जरूर है कि ऐसे नवयुवकों की भी समझ में हम यह बात लायेंगे कि एक सीमा तक ही भावुकता को समाज में सहन किया जा सकता है और सीमा के बाहर जाने पर वह एक महान् अपराध हो जाता है और इतना बड़ा अपराध हो जाता है कि जिस के लिये कठोर से कठोर दंड दिया जा सकता है। जहां तक ऐसे नवयुवकों का प्रश्न है, हम लोगों के सामने भी ऐसे तमाम मामले आते रहते हैं। अभी थोड़े दिन १०–१५ दिन पहले एक मामला भारत सेवक समाज के सामने पेश हुआ। उस में यह हुआ कि एक यूनिवर्सिटी स्टुडेंट ने एक स्कूल जाती हुई लड़की के साथ कुछ अनुचित व्यवहार किया जिससे लड़की के मां बाप ने बहुत ही दुखी और इंसलटेड फील किया और उन में बड़ा रिवेंजफुल भाव जाग्रत हुआ और उन्होंने मुकदमा भी दायर कर दिया। जब लड़की के मां बाप हम से मदद लेने के लिये आये तब हमने उनको समझाया कि अच्छा हो इस मामले को आप बैठ कर और सहूलियत से साल्व करें, क्योंकि ऐसा अपराध नहीं हुआ है कि एक नवयुवक की जिन्दगी आप हमेशा के लिये बर्बाद करें और किसी को आप हमेशा के लिये कलंकित और लांछित करें। नतीजा यह हुआ, हमने दूसरी पार्टी को बुलाया। अन्त में दोनों तरफ के लोगों ने इतनी उदारता दिखलाई कि इस भंयकर इंसीडेंट के बाद उनके बीच का झगड़ा लडके और लड़की के विवाह के पवित्रबधन मे परिवर्तित हो गया। श्रीमन्, मैं यह बताना चाहती हूं कि मैं जो यह विधेयक लायी हूं, मेरा यह बिल्कुल उद्देश्य नहीं है कि मैं एक रिफार्म करूं सोसायटी में। मैं रिफार्मिस्ट नहीं बनना चाहती। मैं यह जानती हूं कि जब तक मानवीय शरीर है तब तक मानवीय दुर्बलता रहेंगी–प्रेम भी होंगे, रोमांस भी होगा। भूलें भी होंगी, और उन को क्षमा भी किया जायेगा। लेकिन जहां ये भूलें रोमांस के दायरे से निकल कर गुंडागर्दी में बदल जाते हैं, वहां उनको रोकने के लिये ऐसे विधेयक की अत्यन्त आवश्यकता है। इसलिये, श्रीमन्, मैं आप से और संसद् के सभी सदस्यों से प्रार्थना करूंगी कि ऐसे गंभीर मामलों में कभी भी मजाक या हंसी उड़ा कर इनको नहीं टाल देना चाहिये। यह प्रवृत्ति मेरे एक क्षेत्र के लिये नही, अकेले समाज सेवा के क्षेत्र के लिये नही, बल्कि पूरे समाज के लिये, पूरे देश के लिये घातक और अत्यन्त हानिप्रद है।

श्रीमन्, इस प्रकार की जो मैं ने दूसरी समस्या बतलाई लोकल गुंडागर्दी की, उस के बारे में मैं यह कहना चाहती हूं कि आज भी दिल्ली में, बावजूद दिल्ली के एक कैपिटल सिटी होने के ऐसे अनेक गुंडे, है जो इधर उधर तमाम अपने ऐजेंट्स रखते है, ऐसे लोगों को रखते है जिन को उन्हों ने यह कह रखा है, उन को रुपया भी वे देते है, तरह तरह की उन को नसीहत-ट्रेनिग भी बाकायदा देते है कि वे स्कूल जाती हुई लड़कियों या कोई दुखाई हुई पति या परिवार से असन्तुष्ट लड़कियों को बरगला कर ले आयें। इस तरह के लोगों का एक जाल सा बिछा हुआ है और उसी जाल के कारण इस प्रकार की घटनायें दिनोदिन बढ़ती जा रही है।

श्रीमन् इसी प्रकार की जो दूसरी बात है, इंटर प्राविशल ट्रैफिकियर्स का गैंग। हम आये दिन ऐसी घटनायें अखबारों में पढ़ते रहते है, ऐसी रिपोर्ट्स हमारे पास यूं भी आया करती हैं कि किस प्रकार इन ट्रैफिकियर्स का गैंग पूरे देश में फैला हुआ है। अभी अभी

थोड़े ही दिन पहले एक अखबार में था कि वह गैंग इंटरनेशनल गैंग है। जापान, चीन और तमाम और देशों में पता नहीं किस प्रकार ये लोग इस प्रकार से लड़कियों को फुसला कर बहका कर उन दूर दूर देशों मे ले आते हैं। उन देशों में पहले वे गये वहां विवाह किया और एक देश से दूसरे देश चले गये। उस का मै सबूत भी आपको बताना चाहती हूं। यहां पर जो जी० बी० रोड है, उसमे मैंने एक बार सर्वे किया सन् १९५४ मे, और उस दर्मियान हमें कुछ घरों से ऐसी स्त्रियां मिलीं जो भारत से नहीं विदेशों से आई हुई स्त्रियां थी, जो कि बिचारी चीन मे, जापान से, कंबोडिया से ले आई हुई थी। पता नही उन को क्या सब्ज बाग दिखा कर धोका दिया गया होगा और उन की यह गति बना दी कि वे अंत में घृणित व्यवसाय पर उतर आई। श्रीमन्, इसी प्रकार की गुडागर्दी की तरह यह जो वेश्यावृत्ति की समस्या है, वह देश के लिये भयानक कलंक है। वह समस्या इन्हीं गुंडों के कारण बराबर पनप रही है। बावजूद इस के कि इसी सदन में थोड़े दिन पहले एक बहुत ही अच्छा और उपयोगी विधेयक पास हुआ, लेकिन उस विधेयक में जो व्यवस्था थी, वह उतनी दूर तक जाने वाली नहीं है, जितनी कि जानी चाहिये; क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि वह विधेयक लाया तो गया था, वेश्यावृत्ति उन्मूलन के लिये, अबालिशन आफ प्रास्टिट्यूशन के लिये लाया गया था, लेकिन हाफ हार्टेडली लाया गया था। उस में भी, श्रीमन्, यह कह दिया गया कि कोई स्त्री यदि स्वतन्त्रतापूर्वक चाहे तो वह इस अनुचित व्यवसाय को —मैं तो उसे व्यवसाय नहीं मानती इस पापमय और अनुचित नारकीय व्यवसाय को—अपना सकती है। लेकिन अगर वह विधेयक लाने के पहले जरा इस समस्या की गहराई मे हमारे गृह मंत्री महोदय गये होते या सरकारी स्पोक्समेन जिन्होंने कि इस विधेयक का निर्माण किया, ड्राफ्टिंग की, वे गये होते तो उन को पता चल जाता कि एक भी स्त्री ऐसी नहीं हो सकती इस देश में और न है, जो इस प्रकार का नाजायज काम अकेले और स्वतन्त्र रूप से, बिना किसी मदद के, करेगी और न इस प्रकार के घृणित तथा नारकीय व्यवसाय को अकेले करने में सफल हो सकती है। हां, यह जरूर हुआ उस विधेयक के बाद कि जो बड़े बड़े ब्राथल्स हैं जिनमे ७०, ७५ या ८० स्त्रियां चुरा कर, बहका कर, बरगला कर लायी जाती थीं वह चीज अब खत्म हो गई है। लेकिन अब उन्हों ने उसी में कम्पार्टमेंट्स बना दिये हैं ताकि कानूनी पकड़ के भीतर वे न आ सकें और यह अनुचित और नारकीय व्यवसाय चलता रहे। श्रीमन्, आये दिन छोटे छोटे बच्चों को दूसरे दूसरे प्राविन्सेज से चुराया जाता है, चुराने के बाद एक के हाथ से दूसरे, दूसरे के हाथ से तीसरे को, और तीसरे के हाथ से चौथे को बेच देते हैं और अन्त में उनका इतना पतन होता है कि वे बेचारे इस नरक कुंड में लाकर जीवन भर के लिये ढ़केल दिये जाते हैं और जहां से बाहर निकलने का कोई दर्वाजा नहीं रह जाता। श्रीमन्, इस विधेयक को जब मैं ने लाने का प्रयत्न किया था, तब मेरे दिमाग में इन तमाम बातों को एक पूरी कहानी मौजूद थी जिन में से एक के बारे में मैं दो मिनट के अन्दर आपके सामने जरूर जिक्र करना चाहूंगी।

श्रीमन्, आदरणीय दातार साहब जो कि हमारे होम मिनिस्टर हैं, उन की कृपा से, यहां के कुछ पुलिस अधिकारियों के कोआपरेशन के कारण, हम लोगों ने तीन चार साल पहले एक ब्राथल में एक रेड किया था। वहां हमें जितने बच्चे और बच्चियां मिलीं उन की उम्र १३ साल से नीचे थी। उन को हम ने रेस्क्यू किया और पूअर हाउस में रख दिया। मैं यहां पर यह बताना चाहती हूं कि किस तरह से अच्छे से अच्छे प्रयत्न और प्रयास को भी आर्गनाइज्ड किस्म की ट्रेफिकियरिंग और गुडागर्दी करने वाले बिफल बना देते हैं।

श्रीमान्, रात दिन परिश्रम कर के हम लोगों ने २४० के करीब लड़कियों को

[श्रीमती सावित्री निगम]

जो वहां मौजूद थीं जिन में १२ बच्चियां भी थीं, जो कोयम्बटूर, उड़ीसा और दूसरे दूसरे प्रान्तों से लाई गई थीं, उन में से कुछ को हम ने रेस्टोर कर के, जिन जिन के माता पिता, भाई बहिन का पता हम लोगों को चल गया, हम ने उन के पास भेज दिया । ये लड़कियां अपने अपने प्रान्तों में जब घर से स्कूल को जा रही थीं या खेलने के लिये निकली थीं तब रास्ते में ही गुम कर दी गयीं । इस तरह से श्रीमन्, हमें जिन लड़कियों का पता चल सका उन्हें उन के घर वालों के पास भेज दिया । श्रीमन्, जहां हमारे पास समाजसेवी लोगों और सरकार का सहयोग था, वहां हम लोगों के खिलाफ इन गुंडागर्दी करने वाले लोगों ने ३ लाख रुपया इकट्ठा किया और एक बढ़िया वकील इन लड़कियों को छुड़ाने के लिये अदालत में रखा । इन लोगों ने एक अच्छे डाक्टर को रख कर यह साबित करवाया कि ये जो लड़कियां वहां पर मिलीं थी उनकी उम्र १८ साल की है और इस तरह का उन्होंने सर्टिफिकेट भी पेश कर दिया, जिस को देख कर हम लोग आश्चर्यचकित हो गये । श्रीमन्, यह भी हुआ कि जिस डाक्टर ने इस तरह का सर्टिफिकेट दिया था हम लोगों की कोशिश से वह नौकरी से निकाल दिया गया । तो इन लोगों ने हमारे समाज के अन्दर गुण्डागर्दी के तरीके से हम लोगों के खिलाफ, जो इस तरह के समाजसेवी कार्य करते हैं, मोर्चा बना लिया है । हम करीब आधी लड़कियों को वहां से छुड़ा कर ले आये । हमारी तीस चालीस सोशल वर्कर्स ने इतनी इनर्जी, इतना परिश्रम और इतना रुपया खर्च किया और रात दिन अपनी बहिनों की सेवा की, उन के खाने पीने की व्यवस्था की और वहां पर जा कर रहना पड़ा और फिर भी गुण्डे लोगों ने अपनी करतूतों से उन के कार्य को विफल कर दिया ।

यह देख कर दुःख होता है कि जब सरकारी अदालत में इस तरह के लोगों के खिलाफ कुछ कार्यवाही की जाती है तो उन को अदालत से बहुत थोड़ा सजा मिलती है । श्रीमन्, मैं यह कहना चाहती हूं कि जब इस मामले में अदालत ने इन लोगों के खिलाफ सजा सुनाई तो हमारे सोशल वर्कर्स के सामने इन गुंडों ने उन का मजाक उड़ाया और हंसते हुए बाकी लड़कियों को फिर से अपने पंजे में कर के नरक कुंड में ले गये ।

तब, श्रीमन्, मैं ने यह महसूस किया कि बिना सरकारी संरक्षण के, या कानून में सुधार कर के, चाहे हम लोग लाख कोशिश करें, इस भंयकर कुरीति को जो समाज के नस नस में एक बड़े विकराल सर्प की तरह घुस गई है, मिटा नहीं सकते हैं । उस समय हम लोगों ने यह निश्चय किया कि इस प्रकार का विधेयक लाया जाये जिस में गुन्डागर्दी करने वाले लोगों की कुछ न कुछ पकड़ हो, पकड़ होने के पश्चात बड़ी से बड़ी सजा दी जा सके । श्रीमन, एक बात इस सिलसिले में मैं बता देना चाहती हूं, वह यह है कि उन में से कई लोगों के ऊपर जुर्म साबित हो गया था । इन में से कुछ लोग, ब्राथेल कीपर्स, थे और ट्रैफिकियरिंग करने वाले थे, लेकिन उन में से किसी को ५०० रु० जुर्माना हुआ और किसी को एक महीने की सजा हुई । जब इन लोगों ने सजा सुन ली , तो मजिस्ट्रेट के ही सामने हंसते हुए कहा कि ५०० रु० तो कम है, अगर ५,००० रु० भी जुर्माना होता, तो हम मजिस्ट्रेट, साहब के शुक्रगुजार होते । इस तरह से इन लोगों को क्रमशः ५,००, ६००, ८०० और एक हजार रुपया तक जुर्माना हुआ लेकिन सजा नही हुई ।

इसलिये, श्रीमन्, मैं ने इस बिल में जो सजा रखी है वह १५ वर्ष की रखी है और जुर्माने की जो रकम रखी है वह १० हजार रु० की है । यह भी ट्रैफिक्यिरिंग और ब्रॉथैल कीपर्स के लिये बहुत कम है, क्योंकि वे लोग एक मिनट के अन्दर इतना

रुपया इकट्ठा कर सकते हैं। यह तो उनका व्यापार है कि एक लड़की को मद्रास से उड़ा लाये और बम्बई में बेच दिया। इस तरह से उनके पास आसानी से २५ हजार रुपया आ जाता है।

मैं होम मिनिस्टर महोदया, दातार साहब और संसद सदस्यों से प्रार्थना करूंगी कि यह समाज के लिए बहुत ही जीवन-मरण की समस्या है। मृत्यु तो एक न एक दिन आती ही है और उसका सामना करने के लिए सब तैयार रहते हैं, लेकिन यह समस्या हमारे समाज में बहुत भयंकर और विकराल रूप धारण किये हुए है। उस स्त्री की दशा को ध्यान में रखिये, जिसे १०० मर्तबा दिन में मरना पड़ता है और मृत्यु से भी अधिक भयानक कष्ट उठाना पड़ता है। ऐसे घृणित लोगों का सामना करना पड़ता है, जिन्हें तरह तरह की बीमारियां होती हैं और अंत में स्वयं भी इन बीमारियों का उसे शिकार होना पड़ता है। इन स्त्रियों के बारे में जब हम कोई विधेयक लाने की चेष्टा करें, तब हमें बहुत संजीदगी और गम्भीरता से उसमें बातें रखनी चाहियें। आप सब लोगों से प्रार्थना करूंगी कि गम्भीरता रखने के पश्चात् हम सब लोग यह विचार करें कि किस तरह से भारत का जो सबसे बड़ा कलंक है, उसे दूर किया जा सकता है। आजादी मिलने के दस वर्ष बाद भी हमारे यहां समाज में अमानवीय नारकीय वेश्या प्रथा मौजूद है। इस चीज को हम तब तक दूर नहीं कर सकते हैं, जब तक कि इसमें जो ट्रैफिकिंग करने वाले हैं, गुण्डागर्दी करने वाले हैं, जिनका प्राविंशियल और इन्टरनेशनल गैंग बना हुआ है, उनको पकड़ने या सजा दिलाने की कोशिश नहीं करेंगे। इसलिए मैं यह भी कहना चाहूंगी कि अगर यह विधेयक सचमुच दूर तक जाने वाला नहीं है, तो मुझे सको विड्ड्रॉ करने में कोई ऐतराज नहीं होगा और मैं होम मिनिस्टर महोदय से प्रार्थना करूंगी कि अगर वे इस विधेयक को उपयोगी समझती हैं और उसमें कुछ अमेण्डमेंट पेश करना सोचती हैं तो मुझे उसमें कोई ऐतराज नहीं है। मेरा तो ध्येय यह है कि इस तरह का कानून बन जाना चाहिये, जिससे हमारी स्त्रियों को इस तरह से नारकीय जीवन व्यतीत न करना पड़े और न उनको खरीदा या बेचा जा सके। अगर इस समय इसमें कोई अमेण्डमेन्ट मूव किया गया, तो मैं इसे अवश्य स्वीकार कर लूंगी।

श्रीमन्, मानवीय दुर्बलता का जहां तक प्रश्न है, मैं यह कहना चाहती हूं कि मानवीय दुर्बलताएं—स्त्रियों, पुरुषों सब में समान रूप से होती हैं और मैं यह भी बताना चाहती हूं कि उनको समान अपराध के लिए समान दंड भी मिलना चाहिये। यहां नहीं मैं और भी आगे जाना चाहती हूं, क्योंकि स्त्रियां मानवीय चरित्र की विधात्री हैं। वे संतान की शिक्षक हैं। जब संतान पहले धरती पर आती है, संसार में आती है, तब से माता के चरित्र का, उनके जीवन-आचार का, संतान पर पूरा असर पड़ता है। इसलिए मैं कहूंगी कि अगर स्त्री में कोई चारित्रिक दुर्बलता है, तो उसको पुरुष से भी ज्यादा दंड दिया जाये। लेकिन, श्रीमन्, मेरी यह बात भी गौर से देखें कि जो बहिनें इस तरह की गुण्डागर्दी और ट्रैफिकिंग के जाल में फंस जाती हैं, उस समय हमें चार पांच बातों को कभी नहीं भूलना चाहिये। एक बात तो यह है कि हमारे समाज की स्थिति क्या है। एक व्यक्ति चाहे वह कितना गलत काम करे, लेकिन समाज उसे कोई दंड नहीं देता है। चाहे उसके परिवार वाले या निकट संबंधी——मां-बाप-भाई-बहिन—यह सब जानते हैं कि हमारे भाई या बेटे में यह चारित्रिक दुर्बलता है, लेकिन उसकी परवाह नहीं करते हैं। अभी मैं आपके सामने एक नमूना पेश करना चाहती हूं। हम ने एक लड़के के मां-बाप से यह शिकायत की कि तुम्हारा लड़का फलां लड़की को छेड़ता है

[श्रीमती सावित्री निगम]

यह अच्छी बात नहीं है । आप अपने लड़के को इस बारे में समझाइये कि वह भविष्य में इस तरह की बात न करे । इस पर लड़के की मां ने कहा कि मेरे लड़के में जो चारित्रिक दुर्बलता है, उसकी मुझे कोई चिंता नहीं है, अगर फ़िकर होनी चाहिये तो लड़की की मां को होनी चाहिये । मेरा तो लड़का है । मेरी तो इज्जत जाती नहीं, इज्जत तो लड़की वाले की जाती है । हम सब लोग इस बात को सुन कर आश्चर्यचकित हो गये । हम सब समाज सेवी उस बहिन के पास इसलिए गये थे कि उससे यह कहें कि उसका लड़का कभी लड़की को छेड़ता है, तंग करता है, सताता है, तो अवश्य मां उसको सजा या दंड देगी । मगर वह कहती है कि मेरा लड़का स्वतंत्र है, आज़ाद है और पुरुष है, तुम जा कर लड़की की मा को समझाओ ।

श्रीमन्, इसी प्रकार धर्म ले लीजिये । धर्म ने तो पुरुषों को हर प्रकार का संरक्षण दिया है । आप यह देखिये कि ऐसे ऐसे दोहे नित्य कहे और सुने जाते हैं :

"सहज अपावन नारि पति सेवत शुभगति लहै ।"

स्त्रियां सहज में अपवित्र होती हैं । चाहे लोग मनोरंजन के लिए कहें या सचमुच कहें, लेकिन इस प्रकार के दोहे या चोपाई एक बार मुंह से निकालने से अगर हम १० नवयुवकों के सामने कहते हैं, तो नौ नवयुवकों के दिमाग में यह बात बैठती है कि स्त्रियां बहुत ही निम्न हैं, ओछी हैं, तुच्छ हैं, दुर्बल हैं और पुरुष बहुत अच्छे हैं ।

डा० रघुनाथ प्रसाद दुबे (मध्य प्रदेश) : कोशिश करके उसको रामायण से हटा दीजिये ।

श्रीमती सावित्री निगम : इसी प्रकार "ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी" भी है । तो हमारे शास्त्रों ने और धर्म ने तरह तरह का संरक्षण पुरुषों को दिया है और विशेष रूप से स्त्रियों के विरुद्ध हमारी मनोवृत्ति ही बड़ी कुंठित बन गई है । इसीलिए बापू ने एक बार कहा था कि यदि स्त्रियां शास्त्र की निर्माता होतीं, यदि स्त्रियों को शास्त्र लिखने और बनाने का अधिकार दिया गया होता, तो इस प्रकार की त्रुटियां कभी भी न हुई होतीं और उनकी रूपरेखा बिलकुल बदल गई होती ।

मैंने व्यवहार के संरक्षण की चर्चा पहले की, अब मैं सामाजिक कुरीतियों की चर्चा करना चाहती हूं । जितनी भी सामाजिक कुरीतियां हैं उनमें से ९९ फी, सदी कुरीतियों में स्त्रियों पर ही प्रहार किया गया है । चाहे दहेज़ की प्रथा ले लीजिये--- बहुविवाह भगवान की दया से रहा नहीं--- चाहे जाति-पांति की प्रथा ले लीजिये, या और भी जितनी समाज में कुरीतियां हैं उन सब को ले लीजिये, उन सारी कुरीतियों का जो प्रहार है वह सीधे स्त्री जाति पर है । उनमें कहीं यह नहीं है कि पुरुषों पर किसी प्रकार का प्रहार किया जाता हो । जहां तक धर्म की बात है वहां तक मैं यह कहना चाहती हूं कि स्त्रियों के मन में भी ऐसी बातें बिठला दी गई हैं, उनकी साइकालोजी ऐसी बना दी गई है कि वे स्वयं ही अपने में एक हीनत्व की भावना पाती हैं । श्रीमन्, जब पाकिस्तान से स्त्रियां आईं, तो बापू ने कई बार ऐलान किया और लोगों को समझाया कि जिन स्त्रियों के सतीत्व पर किसी प्रकार की लूट की गई हो, वे बिलकुल पवित्र हैं और समाज को उन्हें पवित्र मानना चाहिये । उनके इस ऐलान का बड़ा अच्छा प्रभाव हुआ और बहुत से लोगों ने ऐसी बहनों को अपनाया, जो पाकिस्तान में छः, सात, आठ महीने रह कर आई थीं । लेकिन हमें सचाई पर से भी अपनी आंख अलग नहीं करनी चाहिये । ऐसी भी एक बहुत बड़ी तादाद निरपराध बहनों की है, जो कि ज़बरदस्ती और अत्याचार द्वारा वहां पर रखी गई थीं, लेकिन जब वे हिन्दुस्तान वापस आईं तो उनको ग्रहण नहीं किया गया । इतना ही नहीं, मैं एक बहन की बहुत करुणाजन

हालत बतलाती हूँ । उसके पति इस बात के लिए तैयार थे कि मैं उसको अपने घर में ले जाऊंगा और सम्मानित तरीके से रखूंगा, लेकिन परिवार के कई लोग कहते थे कि हम नहीं रखेंगे । जब उस स्त्री से पूछा गया कि तुम्हारे पति तैयार हैं, तुम क्या कहती हो, तो उसने कहा कि मैं अपवित्र हूं, मैं सनातन धर्म में विश्वास करने वाली हूं, इसलिए मैं नहीं चाहती कि मैं अपने पति के घर में जाकर उनको अपवित्र करूं । वह रोती थी और बहुत ही दुःखी थी, लेकिन वह पति के कहने के बावजूद तैयार नहीं थी इस भय से, इस आशंका से कि कहीं वह अपने पति और अपने परिवार को अपवित्र न कर दे । इसलिए जो लोग इस प्रकार के विधेयक को बहुत ही मामूली और लाइट तरीके से लेते हैं, उन्हें मैं बताना चाहती हूँ कि यह बहुत ही संजीदगी से और गंभीरतापूर्वक सोचने वाला और विचार करने वाला विधेयक है । किसी को यह नहीं सोचना चाहिये कि हमें इसलिये इसका विरोध करना चाहिये या इसका मज़ाक उड़ाना चाहिये क्योंकि या तो यह एक स्त्री के द्वारा मूव किया गया है या स्त्रियों के लिये है ।

श्रीमन्, समाप्त करते समय मैं एक बात यह कहना चाहती हूं कि हम जब कभी उन अभागी स्त्रियों की रक्षा के विषय में सवाल उठायें, तो हमें यह कभी नहीं भूल जाना चाहिये कि स्त्रियों का एक स्त्री के रूप में बहुत ऊंचा रूप है और वह है मां का रूप । स्त्रियों का यह रूप समझ कर हमें स्त्रियों के विषय में चर्चा करनी चाहिये । जब हम स्त्रियों की चर्चा करें तो हमें अपना मस्तक एक स्त्री के उस रूप के आगे नत करके चर्चा करनी चाहिये, जो कि एक ऐसी जननी का रूप है जो पैदा होने से लेकर मरण तक हर प्रकार से शरीर का निर्माण करने में, विचारों का निर्माण करने में और जीवन का निर्माण करने में अपने को न्यौछावर कर देती है । जब हम स्त्रियों की चर्चा करें, तो हम उस स्नेहशील बहन का रूप सामने रखें, जो कि अपने भाई पर न्यौछावर हो जाती है और अपने भाई के लिये हर मिनट शुभकामनायें किया करती है । जिस समय हम इस प्रकार के विधेयक पर विचार करें, हम यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि स्त्रियों का एक रूप हमारी उन बेटियों का रूप भी है, जो हमारे घर की नाक होती है, जो हमारे जीवन का अरमान होती है । इसलिये मैं संसद् के सम्मानित सदस्यों से यह प्रार्थना करूंगी कि वे इन तीनों रूपों को सामने रखकर इस विधेयक पर विचार करें । उनको वह रूप जो कि प्रेयसी और नायिका का रूप है, उसको इस समय भुला देना चाहिये । यह एक ऐसा गंभीर विषय है, जो कि सामाजिक कुरीतियों को दूर करने वाला है और समाज में एक स्वस्थ वातावरण उत्पन्न करने वाला है, इसलिये मैं प्रार्थना करूंगी कि महिलाओं के या जननी जाति के इन तीन रूपों को प्रणाम करने के बाद ही माननीय सदस्य इस पर विचार प्रकट करें ।

धन्यवाद ।

MR. CHAIRMAN: Motion moved:

"That the Bill to provide for punishment of persons guilty of molesting women be taken into consideration."

شریمتی انیس قدوائی (اتر پردیش): جناب عالی - ساوتری جی نے جو بل پیش کیا ہے اس میں انہوں نے دو چیزوں کو اس وقت گڈ مڈ کر دیا ہے - بل میں کچھ اور ہے اور جو انہوں نے ابھی تفصیل بیان کی ہے وہ کچھ اور ہے - اپنی سپیچ میں وہ ایک ایسے گیپنگ کا ذکر لے آئیں جس پر ہم لوگ اس سے پہلے بھی توجہ دے چکے ہیں - جس کے لئے گورنمنٹ نے دوسرا قانون بھی بنایا ہے - اس لئے وہ چیز تو یہاں بحث سے خارج ہے - یہ کہنا کہ جو گیپنگ ہے وہ بہت سے برے کام کرتا ہے مختلف صوبوں میں گڑ بڑ کر

عجیب سی بات معلوم ہوئی - لیکن شاید میرے بھائی بھول گئے ہیں کہ آج سے بہت پہلے پرانے دنوں میں ہندوستان میں ایک ایسا سماجی نظام تھا جس میں کہ ذات برادری اور پنچایتیں یہ سب جماعتوں پر کنٹرول رکھتی تھیں - لیکن سنہ ۱۹۴۷ میں ہمارا وہ سارا تانا بانا ٹوٹ گیا کیونکہ بہت سے لوگ گئے اور بہت سے لوگ آئے - لاکھوں کروڑوں کی تعداد میں لوگ پاکستان سے آئے اور لاکھوں کروڑوں کی تعداد میں لوگ یہاں سے گئے - جو وہاں سے آنے والے ہیں انکو میں نے دیکھا ہے - جو یہاں سے گئے ہیں ان کی کیا حالت ہے یہ تو مجھے معلوم نہیں ہے کیونکہ میں نے پاکستان کی کبھی شکل تک نہیں دیکھی ہے - پارٹیشن کے پہلے بھی لاہور اور کراچی نہیں دیکھا تھا - اس لئے ان کے بارے میں میں کچھ نہیں کہہ سکتی - لیکن جو یہاں آئے ہیں ان کی حالت کو میں نے دیکھا ہے اور اس کا اندازہ کیا ہے - ویسے بھی کہا جاتا ہے کہ انسان ایک سوسائیٹی کی چیز ہے اور اگر سوسائیٹی نہ ہو تو اس میں اور جانور میں کوئی فرق نہیں رہ جاتا ہے - بالکل یہی کیفیت تھی جبکہ ہمارے سماج کا تانا بانا ٹوٹ گیا اور جبکہ ہماری سوسائیٹی وہ نہیں رہ گئی جو کہ پہلے تھی اور ہم نے یہ دیکھا کہ ان میں سے کسی کو نہ تو غیرت رہ گئی تھی نہ وہ شرم

[شریمتی انیس قدوائی]

رہا ہے، عورتوں کو طوائفوں کے اڈوں پر پہونچانا ہے، ان کو ویشیا بناتا ہے - تین تین چار چار جگہ بیچتا ہے - یہ دوسری چیز ہے - اور جو شریف گھر گرہست عورتوں کو راہ چلتے چھیڑتے ہیں یا افسر ہونے یا ذمہدار جگہوں پر پہونچنے کے بعد جو عورتوں کی عزت کرنا نہیں جانتے ہیں وہ ایک علیحدہ بات ہے - ان میں اور ان میں بہت فرق ہے - جہاں تک میں سمجھ سکی ہوں میری بہن مسز نگم کا مطلب اس بل میں ان لوگوں سے ہے جو دوسری طرح کے ہیں -

بہر حال میں جو کچھ سمجھی ہوں اس کے حساب سے اس بل پر کہوں گی - میں سمجھتی ہوں کہ وہ ایک اچھی چیز یہاں پر لائی ہیں اور ایک ایسے مسئلہ کو یہاں چھیڑا ہے جس کو چھیڑنا زیادہ بہتر ہے بہ نسبت اس کے کہ اس پر پردہ ڈالا جائے - ابھی تک ہم لوگ پردہ ہی ڈالتے رہے ہیں اور اس چیز کو کبھی میدان میں نہیں لائے - میں نے دیکھا کہ اس ہاؤس میں ہمارے بہت سے بھائی ساوتری بہن کے کہنے پر نہیں بلکہ بل کے الفاظ پر اور اس چیز کو یہاں لانے پر ہنسے - بہت سے لوگوں کو یہ ایک بہت

مسلمان بہنیں برقعہ پہن کر نکلتی تھیں - لیکن وہ زمانہ چلا گیا - اب ہم ترقی کے دور میں ہیں اور اس دور میں مردوں نے بھی ہر چیز نئی اختیار کر لی ہے - تو کم سے کم ذہنیت اور عادتوں کے اعتبار سے بھی انمیں کچھ نہ کچھ فرق ہو جانا چاہئے تھا - مجھے افسوس یہ ہے کہ ذہنیت کے اعتبار سے، اخلاقی اعتبار سے عورتوں اور مردوں دونوں کو آپ کہہ سکتے ہیں کہ وہ پہلے کے اس اونچے معیار پر نہیں قائم رہی ہیں جس پر کہ پہلے کبھی تھیں - ہندوستان کی عورت کو ہمیشہ ستی اور ساوتری سے مثال دی جاتی تھی - وہ صحیح معنوں میں ستی اور ساوتری تھی یہی - اس کی آواز، اس کا جسم، اس کی ہر چیز محفوظ تھی گھر کے لئے، خاندان کے لئے - باہر اس کو کوئی دیکھ نہیں سکتا تھا - آج یہ کہا جاتا ہے کہ ہندو بھائیوں میں پردہ کا رواج نہیں تھا لیکن میں نے خود رامچندر جی کی کہانی میں یہ پڑھا ہے کہ جب رامچندر جی نے سیتا جی کو ڈھونڈنے کے لئے لکشمن جی سے کہا کہ میں ادھر جاتا ہوں اور تم ادھر جاؤ تو لکشمن جی نے کہا کہ میں سیتا جی کو کیسے پہچانوں گا کیونکہ میں نے ان کے بچھوے کے سوائے اور کوئی چیز کبھی دیکھی ہی نہیں ہے - ہندوستانی عورتوں کی شرم اور حیا کی ایک رہ گئی تھی نہ لحاظ رہ گیا تھا اور نہ ایک دوسرے کا خیال باقی رہ گیا تھا - جو ان میں سے یہاں باقی رہ گئے وہ تھوڑے تھے اگر ماں باپ رہ گئے تو بیٹے چلے گئے، بیٹیاں چلی گئیں اس لئے جو باقی رہ گئے تھے ان کو دوسروں کی پرواہ نہیں تھی، دوسروں کی محبت باقی نہیں رہ گئی تھی کیونکہ ن کے جو عزیز تھے وہ باہر چلے گئے تھے اور نئے آنے والوں کو ان لوگوں نے اس طرح سے ہاتھوں ہاتھ نہیں لیا جس طرح کہ لینا چاہئے تھا - اس کا نتیجہ یہ ہوا ہے کہ ہم آج دس برس کے بعد بھی سوسائیٹی کا نظام ٹھیک نہیں کر سکے ہیں - اس میں میں کسی کو الزام نہیں دے سکتی - کیونکہ ہم سب اس کے مجرم ہیں -

---

یہ کہا جاتا ہے کہ عورتیں خود مردوں کو چھیڑنے میں مدد کرتی ہیں - میں اس عمر کی ہوں کہ میں اس بات کو کھول کر کہہ سکتی ہوں - یہ کہا جاتا ہے کہ عورتوں کا لباس، فیشن، لپ اسٹک اور پاؤڈر یہ تمام چیزیں مردوں کا دھیان اس طرف کھینچتی ہیں - وہ مجبور کرتی ہیں کہ ہم کو دیکھیں - یہ سب ٹھیک ہے - ان ہی سب باتوں کو سوچ کر اب سے پہلے ہماری ہندو بہنیں بہت بڑی چادر لپیٹ کر اور گھونگٹ کاڑھ کر چلتی تھیں اور

کی جاتی تھی لیکن ماں بہنوں کی گالیاں بھی دی جاتی تھیں - اگر ماں بہنیں اور بیویاں سب قابل عزت تھیں تو پھر یہ گالیاں نہ ہوتیں - جتنی زیادہ گالیاں ہمارے یہاں ہیں اتنی اور کہیں نہیں ہیں - پہلے یہ چیز چھپی ہوئی تھی لیکن سنہ ۱۹۴۷ کے بعد موقعہ ملا اور وہ برائی سامنے نکل پڑی - سنہ ۱۹۵۰ کی بات ہے- ایک دہلی کے رہنے والے صاحب ہیں- انہوں نے کہا کہ ہم نے اپنی عورتوں کو گھر میں بٹھلا دیا ہے اور کہہ دیا ہے کہ تم باہر نہ نکلو کیونکہ لوگ آوازہ توازہ کستے ہیں - آوازہ توازہ کسنے کا دستور سنہ ۱۹۴۷ کے بعد شروع ہوا اور یہ چیز یہاں ہی نہیں ہے بلکہ تمام ہندوستان میں ہے - پہلے یہ تھا کہ استاد کی چھڑی اور ماں باپ کی تنبیہ اور سماج کا ڈر یہ سب مل کر اخلاقی معیار قائم رکھتے تھے اور لوگ عورتوں کو نکلتے ہوئے جب دیکھتے تھے تو آنکھیں نیچی کر لیتے تھے - لیکن آج یہ ہے کہ کچھ نہ کچھ جملے کہہ دینا ضروری ہو جاتا ہے - یہ میرا تجربہ ہے - کچھ عورتیں ایسی ہیں کہ جن کو دیکھ کر لوگ ضرور ہی بول اٹھتے ہیں اور کچھ ایسی ہیں کہ جو کہ بالکل ٹھیک طریقہ سے گذرتی ہیں، کھڑے ہوکر بات بھی کرتی ہیں، لیکن کوئی شخص نوٹس تک نہیں لیتا - یہ کہہ سکتے ہیں کہ ان کا انداز

[شریمتی انیس قدوائی]

نمایاں حقیقت ساری دنیا میں تھی- دوسرے ملکوں میں میں نے یہ چیز نہیں دیکھی ہے - میں بھی تھوڑا بہت باہر ملکوں میں گئی ہوں - عرب ممالک میں گئی ہوں - اور میں نے ہندوستان کی عورتوں اور وہاں کی عورتوں میں بڑا فرق دیکھا ہے -

آج یہ صورت حال ہے کہ جب کالجوں اور یونیورسٹیوں میں ساتھ ساتھ تعلیم ہوتی ہے دونوں ساتھ ساتھ پڑھتے ہیں - ایک دوسرے کے ساتھ ہر کام کرتے ہیں - سروس کے لئے کوشش کرتے ہیں، سوشل ورک میں بھی دونوں ساتھ ساتھ رہتے ہیں اور سماجی زندگی اور گھر کی زندگی میں ہر جگہ کسی قسم کی پابندی نہیں باقی رہ گئی ہے تو آپ ایک دوسرے پر یہ پابندی نہیں لگا سکتے ہیں کہ وہ کیا کریں اور کیا نہ کریں - لیکن یہ پابندی تو لگا ہی سکتے ہیں کہ ایک دوسرے کی عزت کریں، ایک دوسرے کا احترام کریں - مجھے نہیں معلوم کہ یہ احترام اس سے پہلے تھا یا نہیں لیکن اپنے بچپن سے آج تک جہاں تک مجھے یاد ہے عورتوں کی عزت ہماری سوسائیٹی میں کم ہی رہی ہے چاہے وہ مسلمانوں میں ہو یا ہندوؤں میں ہو - دونوں جگہ عورتوں کے لئے عزت کا جذبہ میں نے کم ہی دیکھا ہے - یہاں دیوی کی پوجا بھی

[MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair]

میں اتنی لائق نہیں ہوں اور یہ بتا نہیں سکتی ہوں کہ کیا گنجائش ہے اور کیا گنجائش نہیں ہے اور کیا کیا سزا دی جا سکتی ہے - لیکن جو سزا دی گئی ہے وہ ایسی نہیں ہے جو کسی غنڈہ یا بدمعاش کے کان کھول سکے اور وہ اپنے کو اس سے روکنا ضروری سمجھے - اس کا مطلب یہ ہے کہ وہ خفیف سا جرمانہ یا معمولی سی سزا کافی نہیں ہے سب سے بڑی چیز تو یہ ہے کہ گورنمنٹ آفیسرس اگر ایسی حرکت کریں تو ان کو ضرور سخت سزا دی جائے -

ساوتری بہن نے سنہ ۱۹۴۸ کا حوالہ دیا - میں نہیں چاہتی تھی کہ اس بات کو یہاں کہتی - میں خود موجود ہوں اور میرے بہت سے ساتھی بھی ایسے ہیں جو کہ گورنمنٹ کے مختلف ڈیپارٹمنٹوں کے آفیسرس کے پاس سے ان لڑکیوں کو ریکور کرکے لائے اور ہم لوگوں کی یہ خواہش تھی، ہم نے گورنمنٹ سے یہ ریکویسٹ بھی کی تھی کہ کسی طرح سے ایسا کیجئے کہ جنہوں نے ایسی حرکت کی ہے اور لوگوں کی مصیبت سے ناجائز فائدہ اٹھایا ہے ان کو تو کم سے کم ایسی سزا مل جائے کہ وہ سروس سے علیحدہ ہو سکیں اور ان کو یہ تو معلوم ہو کہ گورنمنٹ ان چیزوں کو برا سمجھتی ہے لیکن ایسا نہیں ہو سکا - ضرور ہی بدلا ہوا ہوگا تب ہی ایسا ہوتا ہے - لیکن جب لوگوں کے سامنے ایسی باتیں ہوں، پولیس کے سامنے ایسی زیادتیاں ہوں، آفیسرز کے اندر ایسی چیزیں ہوں تب تو ضروری ہو جاتا ہے کہ قانونی طور پر کوئی پروٹیکشن عورتوں کو ملے - یوں ایک آدمی، دو آدمی یا دو چار کی غنڈہ گردی کو معاف کر سکتے ہیں لیکن گورنمنٹ آفیسرس یا پولیس کی اور ان ذمہ دار لوگوں کی غنڈہ گردی کو معاف نہیں کیا جا سکتا ہے جو کہ آفیسز کے اندر بیٹھ کر ضرورتمند اپنی مصیبتیں لے کر آئی ہوئی، اپنے بچوں یا بچیوں کی پڑھائی یا نوکری کے سلسلہ میں مدد مانگتی ہوئی عورتوں کے ساتھ بد تہذیبی کرتے ہیں اور مذاق کرتے ہیں اور ان پر آواز کستے ہیں - ایسے لوگوں کو کڑی سے کڑی سزا ملنی چاہئے - اور اسکول جانے والی لڑکیوں کا پروٹیکشن تو گورنمنٹ کو ضرور ہی کرنا پڑیگا - جب ہم گورنمنٹ کے بھروسہ پر جوان لڑکیوں کو بھیجتے ہیں تو یہ لازمی ہے کہ گورنمنٹ ان کیلئے قانونی طور پر کچھ نہ کچھ کرے - یہ میں نہیں کہہ سکتی کہ آپ دس برس کی سزا دیں یا پندرہ برس کی سزا دیں - لیکن میں سمجھتی ہوں کہ جو موجودہ قانون ہے اس میں کافی گنجائش نہیں ہے اور اگر ایسی گنجائش ہے تو پھر آفیسرز اس کا استعمال نہیں کرتے ہیں -"

[شریمتی انیس قدوائی]

آج بھی یہی صورت ہے - ان دنوں ایک تھانیدار یو. پی. کا ہمارے کیمپ میں آیا جہاں ایک لڑکی برآمد کرکے لائی گئی تھی - وہ تھانیدار جب آتا ہے تو الٹا ہمارے ہی اوپر وارنٹ جاری کرتا ہے اور ہمارے کیمپ کی تلاشی لینا چاہتا ہے - ہم نے گورنمنٹ سے اس کی درخواست کی تھی کہ ایک تھانیدار جس کے سپرد حفاظت کا یہ کام کیا گیا ہے وہ مجرم ہے اس کو آپ سزا دیں - لیکن وہ آج تک اپنی سروس پر موجود ہے - اس طرح کے اور بھی سینکڑوں کیسیز ہوئے - سب سے زیادہ تشویش کی بات یہ ہے کہ ہمارے سکریٹریٹ کا حصہ بھی اس برائی سے خالی نہیں ہے - چھوٹے چھوٹے آفیسرس جس وقت بڑے عہدوں پر جاتے ہیں یا معمولی آدمی بڑے عہدوں پر چلے جاتے ہیں تو ان کو پھر یہ احساس نہیں ہوتا کہ ہمارے یہاں جو آدمی شکایت لیکر آتے ہیں یا کسی کام سے آتے ہیں وہ اتنے ہی ضرورتمند ہیں جتنا کہ وہ خود اس سے پہلے کبھی ہوتے تھے اور اس وقت وہ کسی کے دروازہ پر جاتے تھے -

ان سب چیزوں کو کہنے کے بعد میں ساوتری بہن کا جو بل ہے اس کی تائید کرتی ہوں - میری خواہش ہے کہ ضرور گورنمنٹ اس طرف توجہ کرے کہ کسی طرح کوئی ایسی صورت کی جائے کہ جس سے ہمارا سماجی اور اخلاقی سدھار ہو - اس وقت تو سوسائیٹی کا دیوالہ نکلا جا رہا ہے - عورتیں ، لڑکے سب تباہ ہو رہے ہیں اور مجھے نہیں معلوم کہ تھوڑے دنوں کے بعد کیا ہو گا شاید ہی شریف آدمی نہیں عجائب خانوں میں ڈھونڈنے سے ملیں - اس وقت ایسی صورت پیدا ہو گئی ہے کہ ہماری نوجوان نسل بالکل برباد ہو رہی ہے -

دو چار لفظوں میں میں آپ سے ایک بات اور عرض کرنا چاہتی ہوں اور وہ یہ ہے کہ ہمارے پنڈت جی نے آفیسرز کے لئے ایک لباس مقرر کیا ہے - میرا خیال ہے کہ اگر اسکولوں میں، کالجوں میں اور آفسیز میں عورتوں کے لئے بھی یہی لازم کر دیا جائے کہ وہ پورا اور موٹا کپڑا پہنیں اور سادے لباس میں کام پر آئیں تو اس چیز کا بھی اچھا اثر پڑیگا - یہ ظاہر ہے کہ جب ان کو آزادی ہے کہ دس قسم کا لباس وہ چاہیں پہنیں تو وہ ضرور اچھا کپڑا پہنیگی کیونکہ عورتوں کی یہ ایک عام کمزوری ہے اور اس کو آپ مٹا بھی نہیں سکتے اور نہ یہ مٹ سکتی ہے - وہ اچھے کپڑے پہنیگی - خوبصورت طریقے سے رہیں گی اور اپنے کو اچھی طرح نمایاں رکھنا چاہینگی - آپ ان کو بے ترتیب ڈھنگ سے بال بکھیر کر آنے کو کبھی نہیں کہینگے - لیکن یہ ضرور کہہ سکتے ہیں کہ موٹا اور سادہ لباس پہن کر آئیں - اگر

اتنا ہو جائے تو میرا خیال ہے کہ اس سے بہت اچھا اثر پڑیگا -

اتنا کہنے کے بعد میں پھر ایک بار اس بل کی تائید کرتی ہوں -

†[श्रीमती श्रांस केदबाई (उत्तर प्रदेश) : जनाबे आली, सावित्रीजी ने जो बिल पेश किया है उसमें उन्होने दो चीजो को इस वक्त गडमड कर दिया है। बिल में कुछ और है और जो उन्होंने अभी तफ्सील बयान की है वह कुछ और है। अपनी स्पीच में वह एक ऐसे गेंग का जिक्र ले आई जिस पर हम लोग इससे पहले भी तवज्जह दे चुके है। और जिसके लिये गवर्नमेंट ने दूसरा कानून भी बनाया है। इसलिये वह चीज तो यहा बहस मे खारिज है। यह कहना कि जो गेंग है वह बहुत मे बुरे काम काम करता है, मुख्तलिफ सूबों में गड़बड़ कर रहा है, औरतों को तवायफों के अड्डों पर पहुचाता है, उनको वेश्या बनाता है, तीन तीन, चार चार जगह बेचता है। यह दूसरी चीज़ है। और जो शरीफ घर गृहस्थ औरतों को राह चलते छेड़ते है या अफसर होने या जिम्मेदार जगहों पर पहुंचने के बाद जो औरतों की इज्ज़त करना नही जानते है वह एक अलहदा बात है। इसमें और उनमे बहुत फर्क है। जहां तक मै समझ सकी हूं मेरी मिसेज़ निगम बहन का मतलब इस बिल में उन लोगों से है जो दूसरी तरह के हैं।

बहरहाल मै जो कुछ समझी हू उसके हिसाब से इस बिल पर कहूंगी। मै समझती हूं कि वह एक अच्छी चीज़ यहां पर लाई हैं और एक ऐसे मसले को यहा छेड़ा है जिसको छेड़ना ज्यादा बेहतर है बनिस्बत इसके कि इस पर परदा डाला जाये। अभी तक हम लोग परदा ही डालते रहे है और इस चीज़ को कभी मैदान मे नहीं लाये। मैंने देखा कि इस हाउस में हमारे बहुत से भाई सावित्री बहन के कहने पर नही बल्कि बिल के अलफाज पर इस चीज को यहां लाने पर हसे। बहुत से लोगों को यह एक बहुत अजीब सी बात मालूम हुई। लेकिन शायद मेरे भाई भूल गये है कि आज से बहुत पहले पुराने दिनों में हिन्दुस्तान मे एक ऐसा समाजी निजाम था जिसमें कि जात बरादरी और पंचायतें यह सब जमायतों पर कंट्रोल रखती थीं लेकिन सन् १९४७ मे हमारा वह सारा ताना बाना टूट गया क्योंकि बहुत से लोग गये और बहुत मे लोग आये। लाखों करोड़ों की तादाद मे लोग पाकिस्तान से आये और लाखों करोड़ो की तादाद में यहा से गये। जो वहां से आने वाले है उनको मै ने देखा है। जो यहां से गये है उनकी क्या हालत है यह तो मुझे मालूम नही है क्योकि पाकिस्तान की मैंने शक्ल तक नही देखी है। पार्टीशन के पहले भी लाहौर और करांची नहीं देखा था। इस लिये उनके बारे में मै कुछ नहीं कह सकती। लेकिन जो यहां आय है उनकी हालत को मैंने देखा है और उसका अन्दाजा है। वैसे भी कहा जाता है कि इन्सान एक सोसायटी की चीज है और अगर सोसायटी न हो तो उसमें और जानवर में कोई फर्क नही रह जाता है। बिलकुल वही केफियत थी जबकि समारे समाज का ताना बाना टूट गया और और जब कि हमारी सोसायटी वह नही रह गई जो कि पहले थी। और हमने यह देखा कि इनमें से किसी को ना तो गैरत रह गई थी, न वह शर्म रह गई, न लिहाज रह गया था और न एक दूसरे का ख्याल बाकी रह गया था। जो इनमें से यहा बाकी रह गये वह थोड़े थे अगर मा बाप रह गये तो बेटे चले गये, बेटियां चली गई। इसलिये जो बाकी रह गये थे उनको दूसरों की परवाह नहीं थी, दूसरों की मुहब्बत बाकी नही रह गई थी। क्योंकि उनके जो अजीज थे वह बाहर चले गये थे और नये आने वालों को उन लोगों ने इस तरह से हाथों हाथ नही लिया जिस तरह कि लेना चाहिये था। इसका नतीजा यह हुआ कि हम आज दस वर्ष के बाद भी सोसायटी का निजाम ठीक नहीं कर सके है। इसमें मै किसी को इल्जाम नहीं दे सकती क्योंकि हम सब इसके मुजरिम हैं।

†[ ] Hindi translation.

[श्रीमती अन्नी म किदवाई]

यह कहा जाता है कि औरतें खुद मर्दों को छेड़ने में मदद करती हैं । मैं इस उम्र की हूं कि मैं इस बात को खोल कर कह सकती हूं । यह कहा जाता है कि औरतों का लिबास फैशन, लिपस्टिक और पाउडर यह तमाम चीजें मरदों का रुझान इस तरफ खींचती है । वह मजबूर करती हैं कि वह हमको देखें । यह सब ठीक है । इन्हीं सब बातों को सोचकर अब से पहले हमारी हिन्दू बहनें बहुत बड़ी चादर लपेट कर और घूघट काढ़ कर चलती थीं और मुसलमान बहनें बुरका पहन कर निकलती थीं । लेकिन वह जमाना चला गया । अब हम तरक्की के दौर में है और इस दौर में मरदों ने भी हर चीज नई इख्तियार कर ली है । तो कम से कम जहनियत और आदतों के एतबार से इनमें भी कुछ न कुछ फरक हो जाना चाहिये था । मुझे अफसोस यह है कि जहनियत के एतबार से, अखलाकी एतबार से औरतों और मरदों दोनों को आप कह सकते है कि वह पहले के उस ऊंचे मयार पर नही कायम रहीं हैं जिस पर कि पहले कभी थीं । हिन्दुस्तान की औरत को हमेशा सती और सावित्री से मिसाल दी जाती थी । वह सही माइनों में सती और सावित्री थीं भी । उसकी आवाज, उसका जिस्म, उसकी हर चीज महफज थी घर के लिये, खानदान के लिये । बाहर उसको कोई देख नहीं सकता था । आज यह कहा जाता है कि हिन्दू भाइयों में परदा का रिवाज नहीं था लेकिन मैने खुद रामचन्द्र जी की कहानी में पढ़ा है कि जब रामचन्द्र जी ने सीता को ढूंढने के लिये लक्ष्मण जी से यह कहा कि मैं इधर जाता हू और तुम उधर जाओ तो लक्ष्मण जो ने कहा कि मै सीताजी को कैसे पहचानूगा क्योंकि मैने उनके बिछुए के सिवाय और कोई चीज कभी देखी ही नहीं है । हिन्दुस्तानी औरतों की शर्म और हया की एक नुमायां हकीकत सारी दुनिया में थी । दूसरे मुल्कों में मैने यह चीज नहीं देखी है । मै भी थोड़ा बहुत बाहर मुल्कों में गई हूं । अरब मुमालक में गई हूं और मैंने हिन्दुस्तान की औरतों और वहां की औरतों में बडा फर्क देखा है ।

आज यह सूरतेहाल है कि जब कालिजों और यूनिवर्सिटियों मे साथ साथ तालीम होती है, दोनों साथ साथ पढ़ते है, एक दूसरे के साथ हर काम करते है । सर्विस के लिये कोशिश करते हैं । सोशल वर्क में भी दोनों साथ साथ रहते है और समाजी जिन्दगी और घरेलू जिन्दगी में हर जगह किसी किस्म की पाबन्दी नही बाकी रह गई है तो आप एक दूसरे पर यह पाबन्दी नही लगा सकते हैं कि वह क्या करें और क्या न करे । लेकिन यह पाबन्दी तो लगा ही सकते हैं कि एक दूसरे की इज्जत करें, एक दूसरे का एहतराम करे । मुझे नहीं मालूम कि यह एहतराम इससे पहले था या नहीं । लेकिन अपने बचपन से आज तक जहां तक मुझे याद है औरतों की इज्जत हमारी सोसायटी में कम ही रही है चाहे वह मुसलमानों में हो या हिन्दुओं में हो । दोनों जगह औरतों के लिये इज्जत का जज्बा मैंने कम ही देखा है । यहां देवी की पूजा भी की जाती थी लेकिन मा बहनों को गालिया भी दी जाती थी । अगर मां, बहनें और बीवियां सब काबिले इज्जत थी तो फिर यह गालिया न होतीं । जितनी ज्यादा गालिया हमारे यहा है उतनी और कहीं नहीं है । पहले यह चीज छिपी हुई थी लेकिन सन् १९४७ के बाद मौका मिला और वह बुराई सामने निकल पड़ी । सन् १९५० की बात है एक देहली के रहने वाले साहिब है उन्होंने कहा कि हमने अपनी औरतों को घर में बिठला दिया है और कह दिया है कि तुम बाहर न निकलो क्योंकि लोग आवाजा तवाजा कसते है । आवाजा तवाजा कसने का दस्तूर सन् १९४७ के बाद शुरू हुआ और यह चीज यहां ही नहीं है बल्कि तमाम हिन्दुस्तान में है । पहले यह था कि उस्ताद की छडी और मां बाप की तनबीह और समाज का डर यह सब मिलकर अखलाकी मयार कायम रखते थे और लोग औरतों को निकलते हुए जब देखते थे तो आंखें नीची

कर लेते थे लेकिन आज यह है कि कुछ न कुछ जुमले कह देना जरूरी हो जाता है। यह मेरा तजुर्बा है। कुछ औरतें ऐसी हैं जिनको देखकर लोग जरूर ही बोल उठते हैं और कुछ ऐसी हैं जो बिल्कुल ठीक तरह से गुजरती हैं, खड़े होकर बात भी करती हैं लेकिन कोई शख्स नोटिस तक नहीं लेता। यह कह सकते हैं कि इनका अन्दाज जरूर ही बदला हुआ होगा तभी ऐसा होता है। लेकिन जब लोगों के सामने ऐसी बातें हों, पुलिस के सामने ऐसी ज्यादतियां हों, ऑफीसेस के अन्दर ऐसी चीजें हों, तब तो जरूरी हो जाता है कि कानूनी तौर पर कोई प्रोटेक्शन औरतों को मिले। यूं एक आदमी दो आदमी या दो चार की गुंडागर्दी को माफ कर सकते हैं लेकिन गवर्नमेंट आफीसर्स या पुलिस की और उन जिम्मेदार लोगों की गुंडागर्दी को माफ नहीं किया जा सकता जो कि आफिसेस के अन्दर बैठकर जरूरतमन्द, अपना मुआमला लेकर आई हुई अपने बच्चों या बच्चियों को पढ़ाई या नौकरी के सिलसिले में मदद मांगती हुई औरतों के साथ बदतहज़ीबी करते हैं और मज़ाक करते हैं और उन पर आवाजें कसते हैं। ऐसे लोगों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिये। और स्कूल जाने वाली लड़कियों का प्रोटेक्शन तो गवर्नमेंट को जरूर ही करना पड़ेगा। जब हम गवर्नमेंट के भरोसे पर जवान लड़कियों को भेजते हैं तो यह लाज़िमी है कि गवर्नमेंट उनके लिये कानूनी तौर पर कुछ न कुछ करे। यह मैं नहीं कह सकती कि आप दस बरस की सजा दें या पन्द्रह वर्ष की सजा दें लेकिन मैं समझती हूं कि जो मौजूदा कानून है और उसमें काफ़ी गुंजाइश है और अगर ऐसी गुंजाइश है तो फिर आफीसर्स उसका इस्तेमाल नहीं करते हैं।

[MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair]

मैं इतनी लायक़ नहीं हूं और यह बता नहीं सकती हूं कि क्या गुंजाइश है और क्या गुंजाइश नहीं है और क्या क्या सजा दी जा सकती है। लेकिन जो सजा दी गई है वह ऐसी नहीं है जो किसी गुंडे या बदमाश के कान खोल सके और वह अपने को इससे रोकना जरूरी समझे। इसका मतलब यह है कि वह खफीफ सा जुर्माना या मामूली सी सजा काफ़ी नहीं है। सबसे बड़ी चीज तो यह है कि गवर्नमेंट आफ़ीसर्स अगर ऐसी हरकत करें तो उनको जरूर सजा दी जाये।

सावित्री बहन ने सन् १९४८ का हवाला दिया। मैं नहीं चाहती थी कि इस बात को यहां कहता। मैं खुद मौजूद हूं और मेरे बहुत से साथी भी ऐसे हैं जो कि गवर्नमेंट के मुख्तलिफ़ डिपार्टमेंटों के आफ़ीसर्स के पास से लड़कियों को रिकवर करके लाये और हम लोगों को यह रुवाहिश थी, हमने गवर्नमेंट से यह रिक्वेस्ट भी किया था कि किसी तरह से ऐसा कीजिये कि जिन्होंने ऐसी हरकत की है और लोगों की मुसीबत से नाजायज़ फ़ायदा उठाया है उनको तो कम से कम ऐसी सजा मिल जाये कि वह सर्विस से अलहदा हो सकें और उनको यह तो मालूम हो कि गवर्नमेंट इन चीज़ों को बुरा समझती है। लेकिन ऐसा नहीं हो सका। आज भी यही सूरत है। उन दिनों एक थानेदार पुलिस का हमारे कैम्प में आया जहां एक लड़की बरामद करके लाई गई थी। वह थानेदार जब आता है तो उल्टा हमारे ही ऊपर वारन्ट जारी करता है और हमारे कैम्प की तलाशी लेना चाहता है। हमने गवर्नमेंट से इसकी दरख्वास्त की थी कि एक थानेदार जिसे सिपुर्द हिफाजत का यह काम दिया गया है, वह मुजरिम है उसको आप सजा दें। लेकिन वह आज तक अपनी सर्विस पर मौजूद है। इस तरह के और भी सैकड़ों केसेज़ हुए। सबसे ज्यादा तशवीश की बात यह है कि हमारे सेक्रेटेरियट का हिस्सा भी इस बुराई से खाली नहीं है। छोटे छोटे आफ़ीसर्स जिस वक्त बड़े ओहदों पर जाते हैं या मामूली आदमी बड़े ओहदों पर चले जाते हैं तो फिर उनको यह अहसास नहीं होता कि हमारे यहां जो आदमी शिकायत

[श्रीमती अनीस किदवाई]

लेकर आते हैं या किसी काम से आते हैं वह इतने ही जरूरतमन्द हैं जितना कि वह खुद इससे पहले कभी होते थे और उस वक्त वह किसी के दरवाजे पर जाते थे ।

इन सब चीजों को कहने के बाद मैं सावित्री बहन का जो बिल है उसकी ताईद करती हूं । मेरी ख्वाहिश है कि जरूर गवर्नमेंट इस तरफ तवज्जोह करे कि किसी तरह कोई ऐसी सूरत की जाय कि जिससे हमारा समाजी और अखलाकी सुधार हो । इस वक्त तो सोसायटी का दिवाला निकला जा रहा है । औरतें, लड़के सब तबाह हो रहे हैं और मुझे नहीं मालूम कि थोड़े दिनों के बाद क्या होगा । शायद ही शरीफ आदमी कहीं अजायबखानों में ढूंढे से मिलें । इस वक्त ऐसी सूरत पैदा हो गई है कि हमारी नौजवान नस्ल बिलकुल बरबाद हो रही है ।

दो चार लफ्जों में मैं आप से एक बात और अर्ज करना चाहती हूं और वह यह है कि हमारे पण्डित जी ने आफ़ीसर्स के लिए एक लिबास मुकर्रर किया है । मेरा ख्याल है कि अगर स्कूलों में, कालिजों में और आफ़िसर्स में औरतों के लिए भी यही लाजिम कर दिया जाय कि वह पूरा और मोटा कपड़ा पहनें और सादे लिबास में काम पर आयें तो इस चीज़ का भी अच्छा असर पड़ेगा । यह जाहिर है कि जब उनको आज़ादी है कि जिस किस्म का लिबास चाहे वह पहनें तो वह जरूर अच्छा कपड़ा पहनेंगी । क्योंकि औरतों की यह आम एक कमजोरी है और उसको आप मिटा भी नहीं सकते और न यह मिट सकती है । वह अच्छे कपड़े पहनेंगी खूबसूरत तरीके से रहेंगी और अपने को अच्छी तरह नुमाइया रखना चाहेंगी । आप उनको बेतरतीब ढंग से बाल बखेर कर आने को कभी न कहेंगे । लेकिन यह जरूर कह सकते हैं कि मोटा और सादा लिबास पहन कर आयें । अगर इतना हो जाय तो मेरा ख्याल है कि उससे बहुत अच्छा असर पड़ेगा ।

इतना कहने के बाद मैं फिर एक बार इस बिल की ताईद करती हूं ।]

DR. SHRIMATI SEETA PARMANAND (Madhya Pradesh): Sir, at the outset I would like to make it clear that, though it is not possible to support the Bill in the form in which it has come, it is very necessary that the House should give its serious consideration to the situation to which the Bill points. I would also like to appeal that when Members speak on this Bill, they will keep, with all due deference, to the subject and maintain the same standard which the mover of the Bill and the speaker who followed her have maintained. This is not a subject which can be treated lightly, because the people who are the offenders, who are involved in this, are people of that character. There is no doubt that the situation during the last ten or fifteen years in this respect has deteriorated; as more and more women have to come out to do social work in villages for different projects which the Government has, it is very necessary that their working conditions should be made secure by legislative measures. It was only about two years ago that it was found necessary by the Kasturba Centre to make a change in their Constitution by which one single lady village worker would not be posted in any village, but two would be posted. That has meant additional expenditure. Nursing sisters also some time ago were against being posted in villages because of the situation with which they met. The Labour Ministry also knows what complaints they get again and again from village workers who are posted to work amongst workers' colonies, because of the way in which people treat them. It is equally known that in order to implement most of the Government's social welfare measures, it is only women who can be utilised, because they alone can reach

women in their homes and explain to them the various schemes for their welfare. In a country where there has been segregation of women, though not by law but by social custom and in actual practice, where even today even in educated societies, in clubs and in high societies, because of the traditional attitudes, whenever there is a social function, men flock to one corner and women in another—that being the reserve with which society has looked at this question—where there is no arrangement for co-education at the primary stage, where the attitude and behaviour between the different sexes become natural as between sisters and brothers in a home, it is very necessary that some sort of deterrent is introduced in legislation by which the growing goondaism as it is called of insulting or unseemly attitude to women in public work can be checked I would like to point out that social welfare workers in villages particularly are being threatened with various punishments or revengeful actions if they favour certain persons and do not favour certain other persons. That attitude has to a great extent increased because of the type of cinemas also which we are showing. So, in short, what I would like to say is that the Bill is not framed in the manner it should have been. It should have been really an amending Bill to widen the scope, for instance, of section 354 of the Indian Penal Code which deals with assault and use criminal force against any woman, etc. and then it should have asked for heavier punishment than is prescribed there. The section says:

> "Whoever assaults or uses criminal force to any woman, intending to outrage or knowing it to be likely that he will thereby outrage her modesty, shall be punished with imprisonment of either description for a term which may extend to two years, or with fine, or with both."

In order to make the punishment really felt by the offenders, instead of the words 'or with fine or with both', the words should have been inserted—"and with fine" so that the punishment would have been deterrent. Also, instead of simple imprisonment, it should have been rigorous imprisonment and it should have been compulsory. That would have been really the proper way in which this Bill should have been introduced. It is not at all bringing about an invidious distinction between men and women by asking for heavier punishment for molestation of women. That has been recognised as a principle of law. Even in the ancient law system, it was always the people who had a higher advantage by learning or otherwise, who were given higher punishment. For example, the Brahmin was awarded greater punishment for the same offence than a Kshatriya, a Kshatriya more than the Vaishya, and the Vaishya more than the Sudra, because of their ability to understand things better, which should have prevented them from committing the offence. So, man who has greater physical strength should certainly be punished more heavily for the same type of offence, for taking advantage of the weakness of women in this respect, and the Indian Penal Code has already got a section to that effect. I would also point out here that this Bill, apart from the fact that the punishment you ask of 15 years is very severe and impracticable for that reason, is also very vague in its definition and as such it would not be considered a good law. It says for instance—Molestation includes indecent behaviour towards a woman, insult or assault etc. What is an insult? 'Insult' is beautifully vague and for that reason alone, if the legislation after it is passed, were to be taken to the court, it would be declared *ultra vires* of the Constitution. Therefore, while pointing out the need for Government to consider that adequate amendments of the existing sections of the I.P.C. should be introduced in order to make it possible for so many women doing special work in remote areas with honour and dignity, I would like to ask the Government that they should appoint a small committee of women social workers and themselves draft an

[Dr. Shrimati Seeta Parmanand.]

Amending Bill of the existing sections of the I.P.C. and send it for circulation after putting it through such a Committee and very soon fulfil the desire of the Mover of the Bill as no doubt she has pointed the attention of the Government to the lacuna that is existing in view of the present conditions in the country which, as I said, to no small extent are there due to the present influence of the type of films we are showing, both imported indiscriminately from abroad and produced here in order to copy the foreign films which, notwithstanding the censorship,—one does not know what type of censorship it is—preach crime to such an extent. If you were to see some films—I would mention some films—*Ustad, Aparadhi Kaun, Hill Station*—you will see that they actually teach how to remove women bodily for whatever purpose one may have in mind.

With these few words and after appealing once again to the House to maintain out of respect for their mothers and sisters, a very high level of debate on this subject, I would like to say that though I am not able to support the Bill in its present form, I heartily support and recommend to the Government the principle behind the Bill and request the Government to take action to remedy the lacuna in this respect.

SHRI KISHEN CHAND (Andhra Pradesh): Mr. Deputy Chairman, I fully support the idea behind this Bill and I would not have taken part in this discussion but the hon. Mover, towards the close of her speech, instead of propounding the principle of her Bill, attacked the Hindu religion for absolutely nothing. She tried to make out as if the Hindu religion has placed women on a lower level. She quoted one or two couplets from Ramayana. I don't want to quote any number of couplets from which it will be clear that the Hindu religion has always placed Hindu women on a very high pedestal. So to somehow or other imply by a far-fetched idea that it is part of Hindu religion to put down women—the speech is recorded and the hon. Mover may read it—is too much. It really pained me very much because to run down a religion which has given such a high respect and position to women, just by quoting one line—something about *Nari* and *Pasu* and just to run down the religion—is very unfortunate. You must defend your Bill on ethical grounds and on grounds of polity but somehow or other to put down something against the whole Hindu religion is not fair.

Another aspect of the speech was that according to her a woman should always be considered as a mother and a sister. But I think it is putting a wrong point before humanity and before our countrymen that they should always regard women only as mothers and sisters. It is a normal function. The Creator created the two sexes just for a normal human partnership and therefore we should not bring in extraneous considerations in a Bill of this nature. It is a practical Bill. If there is a certain evil—and it is a very great evil no doubt—in our society, we should try to remove it but to say that when we are considering about womanhood, we should only think of them as mothers and sisters is not right. Normally in the normal span of life, they should always be regarded as companions, equals and friends, in that joint venture of creation of life, joint venture of living together and performing the purpose for which God created them. Therefore I will not look at it from that point of view.

Then the Bill has been brought forward on three grounds. She gave the example that certain women who came from Pakistan were not treated very well. Some people were ready to accept them but the other relatives objected to that. You must have seen in the newspapers only a few days back the case of a Sikh gentleman who became a Muslim and went to Pakistan in search of his wife who

was returned to Pakistan. As you know, he committed suicide when the woman entirely refused to either accept him or even recognise him. The news have come in the papers. If you only base your argument on one or two examples or half a dozen examples that are quoted here and you say because there are those examples of some women not being accepted, you need this Bill, I can quote any number of examples where women have now gone to Pakistan and the men have gone after them and they have not been accepted. So our argument should be based on whether there is evil. Let us discuss about that and find out remedies for it but let us not give one or two isolated examples here and there and try to dub the whole community as bad. That is not correct. There are three types of cases. One is the white slave trade. It is a well-known evil. For that there are international laws. I don't think this Bill is going to tackle the problem of white slavery. Our Government has taken a very strong attitude and I think there are enough laws in the Criminal Procedure Code against the evil. We don't permit the maintenance of brothels. We give very severe punishment to people who are misleading or misguiding young girls and women and who take them to the white slave traffic

The other thing is about the young boys and girls seeing the cinemas. It has had bad effect—the horror comics I know the case of very large number of young girls, college girls who have run away from homes and gone to Bombay and ther are found hovering the cinema stars and producers trying to get a job. I know several cases where they are sitting on the door for days and nights of a male star or a cinema producer in the hope of getting a job in the cinema. So it is a two-sided traffic. Of course I suppose the boys take the initiative in many cases but take the case of U.S where boys and girls go to co-educational schools. You don't see so many examples of molestations. In many cases of molestations, there is partial agreement upto a certain stage. Whenever there is a difference of opinion and the girl feels that the boy is not fair to her, from that moment she adopts the excuse that she has been molested. I agree that whenever there are genuine cases, they should be taken into account. We find in other countries, co-education is common. The whole of education in America is based on co-education and specially this relationship between boys and girls—the teen-agers—is the biggest problem and they are trying to solve that with a proper sense of perspective. This problem is being solved by them but in our country, instead of understanding this problem of the teen-agers who are in schools and colleges, and their relationships —it is a new thing in our country— we come forward with this Bill and simply say 'Have it as an one-sided affair. Immediately there is a report made by a girl, you decide it as an one-sided affair.' This is a modern problem, this problem of teen-agers for, they live together, grow up together while they are studying together. This is a problem which has to be scientifically tackled. You know several American authors have written books about this relationship. I think an hon. Member made an appeal that we should not mention about the findings of these various reports and I do not want to refer to them. But the general trend in the matter of the relationship of these teen-agers is not to put the blame only on one side. I suppose both sides are equally to blame in a free society.

Lastly on the point relating to goondas. I entirely agree with the hon. Mover of this Bill and if there is any molestation of a woman, that should be dealt with. For instance, if there are groups of boys or men who pass disrespectful remarks or bad remarks about any woman or about any girl, for that I think, there are police men in disguise, wandering about at bus stands and other such places and whenever they come

[Shri Kishen Chand.]

across any person using abusive language against a woman, they take action and there have been several such cases. I wholeheartedly support that part of the Bill where it is said that the goondas who try to make fun of a woman passing along a street should be properly dealt with. That type of people should certainly be caught hold of and for that we have tightened up the law. But from that you cannot immediately jump to white slave traffic and so on. For all that there are already laws in existence and this Bill does nothing to add anything to them, not even a single line. Therefore I only agree with that part of the Bill where there has been a provision against goondas. The rest of the Bill has already been provided for and there is hardly any use for it.

SHRI P. N. SAPRU (Uttar Pradesh): Mr. Deputy Chairman, I have every sympathy with the desire of Shrimati Savitri Devi Nigam to live in the history of this Parliament as a jurist and as a legislator. But I regret to say that I find it very hard to understand the nature or the object or the meaning of this Bill Mr. Deputy Chairman, when I read this Bill I wondered whether some hon. Member here should not bring forward a Bill, whether he should not promote a Bill in this House for the protection of men from molestation by women. Mr. Kishen Chand has treated the matter far too seriouly and I think there is nothing really which.....

SHRI B. K. P. SINHA (Bihar): There is nothing serious about it.

SHRI P. N SAPRU: Yes, there is nothing very serious about the Bill. Certainly I speak as the champion of the rights of women. I like them to have complete quality, equality in every sphere of life. I believe in equality but I do not believe in shibboleths. I would like women always to take a reasonable view with regard to these matters.

Take the Indian Penal Code. I think the Indian Penal Code, though it was enacted in 1860, is a monumental piece of work and there are sections in it which . . .

SHRI AMOLAKH CHAND (Uttar Pradesh): But that was in 1860 and we are now in the year 1958.

AN HON. MEMBER: It is not yet hundred years.

SHRI P. N. SAPRU: You have there section 354 which deals with outraging the modesty of a woman. We may have to change that section here and there; but that is a different matter. Just look at the juristic conception which this Bill will introduce in our system of law. It says:

> "'Molestation' includes, indecent behaviour towards a woman, insult."

I don't know what this word "insult" means here. I mean, if you say something you know, which is derogatory to her dignity or if you say something which she regards as insulting, you can be punished for a period of fifteen years. Our Penal Code or our Criminal Code, they give sentences of imprisonments simple imprisonment and rigorous imprisonment, but the maximum period for which a person can be sentenced under these Codes is ten years or transportation for life. This period of fifteen years is just unheard of, and great credit is due to Shrimati Savitry Devi Nigam for discovering a new basis for punishment.

And then it goes on to say:

> "with intent to outrage her modesty, kidnapping, abduction, procuration or importation or wrongful confinement of a woman for an immoral purpose."

Now, we have got many sections in our Penal Code. We have sections on kindnapping, we have got sections on abduction. We have sections on rape. And then we have enacted the Suppression of Immoral Traffic Bill which

is a very strong measure and a very right measure too. We supported that measure and passed it a couple of years back or about a year ago. What more protection does the hon. Member Shrimati Savitry Devi Nigam want for women?

And then you see, not only the person molesting, but the person who abets is to be punished. Now, I may be going along with a friend and he may be a very gay person and he may make some remark and I shall also be booked for fifteen years. And this is the Bill which this House is asked seriously to enact. May I, Mr. Deputy Chairman, say one or two words about my experience as a lawyer and as a . . .

SHRI B. K. P. SINHA: As a judge.

SHRI P. N. SAPRU: Yes, as a judge, if you like.

Some years back, I had a case before me in which a university student, an LL. B. student was involved. He had been sentenced by the sessions judge to four years for kidnapping a minor girl. The girl was not minor. That was established by the medical evidence in the case. The sessions judge did not pay sufficient attention to the medical evidence and when in the cross-examination the question was put to the doctor whether she could swear that the girl was below 16, the doctor said she couldn't, she may be well over 16.

DR. RADHA KUMUD MOOKERJI (Nominated): May I press for a limit to be put on the exposition of crime in this House?

SHRI P. N. SAPRU: Then the counsel who appeared in the case invited my attention to certain correspondence which had passed between the parties. This girl was well-connected. Her uncle was a Rai Bahadur. This girl had written to this unfortunate young man about 30 or 40 letters and I went through those letters. Well, they were of a highly voluptuous character, and I did not like to have them read out in court, and I was deeply distressed to find that a girl of that tender age was capable of writing those letters. But those letters were put to her. The girl first just denied having written them. Then she said that she had written them at the dictation of the young man. That obviously was a falsehood.

Now therefore it is a two-way traffic. It is a two-way traffic, and if men can seduce women, may I in all humility say that in modern society women can also seduce men?

AN HON. MEMBER: They do.

SHRI P. N. SAPRU: And therefore, as the champion of a new womanhood Mrs. Savitry Nigam should have been the last person to bring forward a Bill of this character.

Mr. Deputy Chairman, we have in our Constitution equality assured to women in every respect. There is article 15 of the Constitution, and there are various other articles, and the spirit of our Constitution is in favour of equality. Now I think it is contrary to the spirit of equality to enact a measure of this character. I do not say that the law as put down in section 354 is perfect. There may be a case for modifying that section here and there and I can myself think of certain modifications in that section. But the way to go about the business is not the way that Mrs. Savitry Nigam has chosen.

Well, a lot of things have been said about abducted women, about brothels, about horror comics and all that sort of thing. But I rather think that in these matters we have to take a rational view. Young men will be young men and young women will be young women. We need to develop in our society certainly high standards of good conduct, and I don't see why,

[Shri P. N. Sapru.]

if the atmosphere of a home is good, a young girl should go wrong, or a young man should go wrong. We need to improve the atmosphere of our institutions; we need to improve the atmosphere of our society. We have inherited a certain social system and the difficulty is that for many young men in our colleges it is a new experience to come across or to meet girls who do not belong to their immediate family circles. But I think it is a great tribute to them that, notwithstanding the newness of this experiment in co-education, cases of actual misbehaviour are very very few; you can count them almost on your finger tips. I do not think our Vice-Chancellors or our Principals of colleges have been seriously troubled about sexual misbehaviour in our universities and in our colleges. There may have been occasionally such cases. After all we are a community of 400 or 350 millions, and you cannot expect everyone to be absolutely perfect. Even our *rishis* of old were not completely perfect. Therefore may I say that the whole matter should be looked at by Mrs. Savitry Nigam in a new spirit? I know that she is a most valued social worker. I know that she speaks from experience in these matters, but we have to develop a right philosophy in these matters. We cannot just bring about a lot of changes in our law, which, if done, would make a mockery of our law. I suppose what Mrs. Savitry Nigam wants is really a change in the Evidence Act since there are very few convictions. Well, the answer to that is that judges have to act on the evidence which is placed before them and it is not possible for them to accept in every case the evidence of the prosecutrix. If you file a complaint, if you go to a court of law, then you must be prepared for a rather severe cross-examination, and I think, if you are a truthful witness, you should be able to stand that cross-examination. I know no alternative to the legal system that we have at the present moment in this country. Either we believe in socialism within the framework of a democratic society, or we do not. Either we believe in the rule of law, or we do not. Either we believe in the legal process, or we do not. These questions admit of only one answer and that answer is that we believe in socialism within a democratic society, and a democratic society cannot exist without the rule of law. Parliamentary democracy, the rule of law and socialism, they go together. Therefore Mrs. Savitry Nigam is neither promoting socialism nor democracy nor the rule of law by this measure. I do not know what she is aiming at. We do not want the rule of Chengiz Khan in this country. I think that age is gone by, and therefore in all seriousness I would say that this is a measure which should not be accepted by Government; it should be rejected by Government outright, and if, as a result of a close study of the various laws affecting sex and women in this country, they come to the conclusion that some changes are necessary, they should promote a Bill of their own.

With these words, Mr. Deputy Chairman, I would very strongly oppose the Bill which has been sponsored by Mrs. Savitry Nigam. I give her credit for social earnestness, for moral earnestness, but I cannot give her credit for having thought out the consequences of what she wants this House to accept.

SHRI B. K. P. SINHA: My Deputy Chairman, I propose to steer a middle course between the speaker who preceded me and the mover of this Bill. While I agree with the essence of the Bill, the principle that it embodies, I find it difficut to support the measure as it is framed.

Problems are there, problems have always been there, and it is to meet those problems that laws are framed, but the problems are not peculiar to India. The hon'ble the Mover gave

the impression as if there is something venal about us, something wrong with our process of thinking, with our ideas about women and that this wrong has continued from time immemorial, I am afraid that is a wrong impression that she has and which she made an effort to spread.

Women in India have always been highly respected. She quoted some couplet from the Ramayana, but I can quote one *sloka* from Manusmriti:

" यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता "

meaning, wherever women are worshipped, Gods make that place their abode. They were so hallowed. They are so respected even in ordinary usage. When we think of the Gods and their consorts, it is the consorts whose names we utter first. For example, we do not say Ram Sita; we say Sita Ram. Likewise we do not say Krishna Radha; we say Radha Krishna. So that is the high place that Indian society in ancient times gave to women. Our ancient *rishis* conceived of Gods, conceived of creations.

As the time is up I shall continue after lunch, Mr Deputy Chairman

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, The House stands adjourned till 2·30

The House then adjourned for lunch at one of the clock.

The House reassembled after lunch at half past two of the clock, MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.

SHRI B. K. P. SINHA: Mr. Deputy Chairman, I was saying....

SHRI KISHEN CHAND: The hon. mover of the motion is absent.

SHRI B. K. P. SINHA: It does not matter. You officiate for her.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is now your property; it is now your child.

SHRI B. K. P. SINHA: I was saying that our ancient *rishis* conceived of God, conceived of creation and cosmos and in the process of evolving cosmos they conceived of a being which was the quintessence of godhead and that quintessence of godhead that primordial force the *rishis* conceived of as woman and not as man. Thus the highest stature was accorded to women in our ancient society. To cut a long matter short I would refer to another *sloka* from our ancient books which shows in what high esteem women were held:

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

The 'mother' and the 'motherland' they are weightier even than *Swarg*, more preferable than *Swarg*. And even in the modern age when Bankim Chandra sang of India he sang of India as mother and not India as father. All this shows that from very ancient times women have been held in high esteem in Indian society, in Hindu society. In the modern age, no doubt, because of thousands of years of slavery, society degenerated and that degeneration, that decay was manifested in every limb of society and women did not escape that. Even then if the hon. Mover would read the great novels of Sarat Chandra Chattopadhyaya, who is modern and not ancient, she will realise what high place Hindu society or Indian society even in its decay gave to women. Women have always occupied a high place in Indian society.

In the modern age some problems have been created *vis-a-vis* women. Those problems are not peculiar to India. My hon. friend, the Mover, seems to think as if those problems are peculiar to India. I would advise her to read the reports of the Federal Bureau of Investigation of America and then she will know and she will realise that what we are shocked at in India is prevalent in what we consider more advanced societies, which according to us accord a higher place to women. In those societies women

[Shri B. K. P. Sinha.]

are subjected to very shocking treatment. And if an institution which has now been given the name of 'roadside Romeos' appeared in Delhi, it has appeared precisely because of the problems created by modern industrial society. We have a heavy concentration of men, of population in big cities. Naturally these problems which have been existing all the time find an aggravated expression in such society. And they find expression not only in Delhi, not only in the cities of India, but in all the cities of the world. The problems, therefore, in my opinion, are not peculiar to India. The problems have to be met. But how should they be met? They cannot be met by legislation alone. We seem to think as if legislation is the panacea for all evils. Legislation is not. Legislation is one of the milder instruments for dealing with such problems. These problems arise because of certain maladjustments in society and unless those maladjustments are removed, unless those basic causes are removed, these problems shall always be there, whatsoever be the law, however rigorous be the law. Therefore . . . .

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I think all this discussion is out of place, because everyone of these acts mentioned in this clause is an offence under the Indian Penal Code even now. All that she seeks to do is to bring them under one clause and enhance the sentence to fifteen years for all offences.

SHRI B. K. P. SINHA: That is precisely my argument.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I think we need not go into the jurisdic aspect or the penalisation of the acts. They are already offences under the Indian Penal Code.

SHRI B. K. P. SINHA: Exactly, but she wants to put a higher punishment.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is all. That is the only thing—whether she can do it under one clause and whether all these acts deserve that punishment she wants to prescribe.

SHRI B. K. P. SINHA: She wants to put a higher punishment because of certain causes, because as she suggested the problem has been aggravated in the modern age. And that is why I am referring to those. What are the causes of this aggravation? All this aggravation cannot be met only by legislation, because when we deal with legislation, we do not deal with legislation in an isolated manner. Legislation deals with social problems and my point is that only legislation is ineffective. We must deal with the social problem on a wider social plane and only then legislation can be effective. That is my whole point. I do not see how I am irrelevant.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: These acts are already offences even under the Indian Panel Code.

SHRI B. K. P. SINHA: I need not argue that. They are already offences. Then this Bill is unnecessary . . .

SHRI AKBAR ALI KHAN (Andhra Pradesh): Only increase punishment.

SHRI B. K. P. SINHA: Because of changed situation.

SHRI AKBAR ALI KHAN: The menance has grown very much.

SHRI B. K. P. SINHA: Exactly. That is what I am explaining. I do not see how I am irrelevant. That would have been perfectly relevant even in a court of law. I do not see how it is irrelevant in this Parliament where we are not controlled by the rules of evidence that we have in the courts of law.

(At this stage Shrimati Savitry Devi Nigam entered.)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The hon. Mover must be present in the

House to hear the arguments of the Members.

SHRIMATI SAVITRY DEVI NIGAM: I am sorry, Sir.

SHRI B. K. P. SINHA: Therefore, I have alreay expressed that we have to meet this problem on a wider plane, on a social plane.

Now, coming to the Bill, I feel that it is rather very widely and vaguely worded.

AN HON. MEMBER: Badly.

SHRI B. K. P. SINHA: 'Vaguely' I said. I cannot use the word 'badly' for a Bill framed by a woman. *(Interruption)*. Well, the theory of punishment has been that punishment will suit the crime. For different kinds of crimes, for crimes of different gravity, different kinds of punishment are provided. This Bill lumps together about six or seven types of crime and then prescribes one punishment for all of them. I feel that a better course would have been, as the hon. Member from Madhya Pradesh, Shrimati Seeta Parmanand, said, that the relevant sections in the Penal Code should have been amended and then the purpose that this Bill has in view would have been better served.

I also feel that when we come to the punishment clause, it says: "imprisonment up to fifteen years or with fine". The general pattern is imprisonment as well as fine. It is left to the discretion of the court. There should be a change in this respect also. For the word "or" the word "and" has to be substituted. So far as the question of 15 years is concerned, my hon. friend from Uttar Pradesh felt very worried. He said that the Penal Code knows of a punishment of imprisonment for ten years and then imprisonment for life. But the Penal Code is not the last word in criminal jurisprudence. Criminal jurisprudence did not stop when Lord Macaulay put his penal ideas on the Statute Book, and if somebody were to prescribe a punishment of 15 years, I do not think it would be very wrong simply because the Indian Penal Code does not contemplate this. But then, 15 years should be provided for crimes of special gravity or of a specially offensive nature.

Then, Sir, some of the words in the Bill are rather vague. "Indecent behaviour towards a woman", "insult"—I do not know exactly what connotation they will receive, because men's behaviour towards women varies from country to country. What is considered indecent in one country, what is considered indecent even in one State of India, may not be considered indecent in another State of India. I am reminded in this connection of something that I learned from a lady who had recently been to America. Wherever she would go, she would be accosted by strangers and told "Oh, Madam, how beautiful you are." Well, with this Bill, if somebody repeats that in India, he would be put in jail for 15 years together with a fine of Rs. 10,000.

Then, Mr. Deputy Chairman, I read some accounts of Spain. In Spain a young girl goes out on the street and if she is met by a young man, the young man must tell her "Oh Madam, how nicely dressed you are, how beautiful you are", and sometimes he has to blow a kiss to her. If he does not do that, he is considered uncivil. If such a thing is repeated in India, under this Bill that man would be put in jail and would be subjected to a fine of Rs. 10,000.

I am lastly reminded of the account that I read in the Readers Digest several months ago. The article was written by an eminent American lady who was attached to the American Embassy in Italy—rather an important lady in her country and, in Italy also, tall in stature, rather strong and hefty in build. She writes that she likes the Italian people, and to show why she likes them she relates several incidents which disclose that they have a fund of humour.

[Shri B. K. P. Sinha.]

What is that humour? She was going one day and she was met by a man and the man admired her and said "Madam, you are so tall, one has to put a ladder". Again, Sir, the next incident she relates, and relates with good humour, and takes it as an appreciation of herself: "Oh, Madam, you are so tall, so well built; I know you have a husband but you require another one". If such things are said in India, I am afraid under this Bill, he will get 15 years.

Therefore, Sir, what I feel is that the words should be more precisely defined: And then we should have a proper conception of indecency or incivility which would suit modern conditions and the modern world. We are all for change. We are all for progress We want that society should progress in every sphere, in every sector. But then, if society progresses, the consequences of that progress must also follow. But while we want progress, we want according to this Bill to stick to a tradition or go back to a tradition which was prevalent when society was the forest society, when people lived in forests, when there were few villages and no towns. Therefore, while I feel that the problem is there and the problem needs solution, I also feel that this Bill is not the proper solution. The proper solution would be to set up a small body of men who would go into this question deeply, study all the literature that is available in the various countries of the world, and thereafter draft a Bill. To such a Bill I will give my full support.

In the end, Sir, I will again remind the House that while I agree with the principles, while I appreciate the sentiments of the hon. Mover of the Bill, I am afraid it is not possible for me to support this Bill as it is worded.

Thank you, Sir.

SHRI AMOLAKH CHAND: Mr. Deputy Chairman, I rise to oppose the Bill as has been moved by the hon. Mover. If we go through the various offences for which she wants the word "molestation" to be applied, "indecent behaviour towards a woman, insult, assault or criminal force with intent to outrage her modesty", these are covered by section 354 of the Indian Penal Code. The present position is that if one commits an offence, which usually is very difficult to prove in a court of law, the sentence is two years imprisonment maximum. Then, if you go further, "kidnapping" is an offence under section 363. Then abduction. "Procuration" is another offence under section 366A. "Importation" comes under 366B. "Wrongful confinement of a woman for immoral purposes", as has been pointed out by Mr. Sapru, forms another offence in the same Penal Code.

Now, I can understand the idea of the hon. Mover that the Penal Code was enacted in the year 1860, and today we are in the year 1958 and so naturally there should be more protection for women and the sentences should be enhanced. Now, as has been pointed out, under the Indian Penal Code there are various types of offences and various types of courts which are competent to deal with them. A magistrate of the first class can sentence a person to two years rigorous imprisonment or a fine in some cases up to Rs. 1,000 and in some cases up to Rs. 5,000. Now what would be the effect if we pass this Bill? The result would be that in all cases the court which would have jurisdiction would be only the Sessions Court, and we know that going to a Sessions Court for a woman would be more difficult than appearing before a magistrate. First there would be an enquiry, then the commitment to the Court of Sessions, then a regular Sessions trial, and then a sentence if it can be proved. As far as the sentence itself is concerned, it is a novel sentence that has been proposed. We know there is a capital sentence. If capital sentence had been here, I could have understood it as of the primitive ages where

if you look at a woman, your eyes may be blinded; if you commit theft your hand may be cut off; an eye for an eye and a tooth for a tooth, and so on and so forth. What is the present type of punishment? Even now, we want that there should be no capital punishment.

SHRI AKBAR ALI KHAN: She is a great advocate of that.

SHRI AMOLAKH CHAND: Might be, but she was not present in the House. Opinions may differ. As far as capital punishment is concerned, she does not want that. The other type of punishment that we know is transportation for life. What does transportation of life mean? It is only 14 years' rigorous imprisonment, not transportation to the Andamans. Those days are gone.

SHRI P. D. HIMATSINGKA (West Bengal): She may welcome that.

SHRI AMOLAKH CHAND: If she is interested in the Andamans, it does not mean that people who molest women should be sent to the Andamans. What I want to say is that this 15 years' imprisonment is something never heard of. Transportation itself means only 14 years' rigorous imprisonment. Those who have had occasion to be in jail for years know that transportation for life means only 14 years and there too you get some rebate, some remission and all that. What I want to point out is that the scheme of the Bill is not acceptable in practice. As far as the idea of it is concerned, it is laudable. But it is a work in the social field, not to be attempted through legislation. I might remind you of what Mr. Sapru said about molestation of men by women. That may be a different matter altogether, but I do feel and I entirely agree with Mrs. Kidwai when she points out that ladies themselves should behave in a manner that they may not attract attention, in a maner that would not cause remarks to be made at them. Those who visit Connaught Place would see how they dress themselves, how they exhibit themselves, and I would like Mrs. Nigam to take up this matter and see that these things are also curbed. At least I am one of those who never stir out of my house for the very simple reasons . . .

SHRIMATI YASHODA REDDY (Andhra Pradesh): You must have confidence in yourself.

SHRI AMOLAKH CHAND: When ladies don't have, how can men have? What I am suggesting is, as has been pointed out rightly by Mrs. Kidwai, we should look at it from a social point of view and try to see Indian ladies behave in the same old traditional manner. Considering the climate and culture of the country, they also should behave like that. Now, it is said that they would like young men to be away from young girls. If you want the progress of the country, if you want to base your society on Western ideas, these things will follow, but the main thing about which she is particular and about which I am also very particular is that women should lead a moral life, should lead a chaste life and by persuasion convince the men that they should not try or attempt to outrage their modesty. With these few words, I oppose the Bill.

SHRIMATI YASHODA REDDY: Sir, I rise to oppose this Bill. That does not mean that I want that those who modest women should go unpunished. I congratulate Mrs. Nigam for having brought forth this Bill; I congratulate her for the sentiments expressed in it. While I fully appreciate that she is very serious about this, personally, I do not think this is the way to mend a social evil she is trying to mend. By bringing in this Bill, she is giving a premium to the House, to the society and the world that India has morally degenerated. Do you think that all Indian men are completely devoid of morals? We have got enough punishment, we have got enough provisions in the law for

[Shrimati Yashoda Reddy.]

the punishment of offenders in our penal Codes. By bringing in such a Bill, why give out the impression that in India women cannot get out of the house without being molested by young men and old men? I think that is doing an injustice to the men of our country.

Secondly, I feel that as long as we have confidence in ourselves, no man can do anything to us. I can say that I have lived more with men than women and I have had occasion to live with men day and night for days and never in my life I can tell you a man has mis-behaved with me. Unless there is at least one per cent. leniency on the part of a woman, I do not think a man can do anything to her, and yet, if he says anything, he will soon realise that he is at fault and say, 'Sorry' to you. Why is India great today? Why are Indian women appreciated? It is because Indian women have been chaste Indian women have been able to mend men's ways by gentler methods, by subtler methods, by teaching them good behaviour, but not by legislating laws, not by trying to derogate men in public places. I think that for such a dignified House it is undignified to discuss such a thing in this way; I am really ashamed of it.

Lastly, I would like to say that laws cannot do anything. Laws are not going to prevent men from doing what they want. Laws are not going to prevent women from doing what they want; they can not restrict human behaviour. It is a social question. It is we, women, the mother and the wife, who are to change the way of life of men and reform them if they are bad. It is not for us to say that we must give 25 years' punishment or forty years' punishment I know some men are bad but what about the women who are creating trouble? Women also go about and sometimes try to attract men, sometimes for money, sometimes for this, sometimes for that. Suppose men bring forth such a Bill, are we to say that we do not want such a Bill? You must have confidence in yourself, you must have confidence in men, and in a humbler sphere in the family and in the bigger sphere in society, try to improve the morals of men. Let not the women have a feeling of inferiority complex that we are the weaker sex. I think that when time comes, we can prove to be the stronger sex.

AN HON. MEMBER: You are.

SHRIMATI YASHODA REDDY: Let not the boys in schools and colleges go about with the feeling that women think that men are bad. Let the women in schools and colleges go about with the feeling that men are also good. Let them not start their careers thinking that all men are bad. Let us not create unhealthy atmosphere by such laws. In spite of the sympathy that I have with the Mover, I must say I cannot support the Bill by any stretch of imagimation. Thank you.

SHRI P. T. LEUVA (Bombay): Mr. Deputy Chairman, I would follow the illustrious example set by my predecessor. In an eloquent speech she has taken out much of the fire that I could have put in my speech. I may remind the hon. the Mover that her enthusiasm had over-ridden her judgment. It is no doubt true that social problems do not all admit of legislative solution. Some problems are such that they can be set right by legislation; there are certain questions which are incapable of solution merely by legislation; you require also social consciousness to be roused against them It is no doubt true that especially in the younger generation, we see a lowering of standards as far as morals are concerned. Those people who are reading the newspapers carefully will come across cases or instances which really go to show the lower depths to which human mind can go. But these problems are not the problems of the

3 P.M.

villages or towns. Most of these relating to social immorality are the result of conditions existing in overcrowded cities. These problems arise because there is social disturbance and we cannot solve this problem merely by legislations. I was surprised to hear the hon. Mover to speak so eloquently regarding this Bill. If I remember right, she is a very enthusiastic champion for penal reforms. She wants to treat the offenders, guilty persons, as patients who must be reformed. She is also very deeply interested in the abolition of capital punishment but when I read this Bill, I was trying to visualise a picture when there can be a sudden transformation in the person overnight, so to say. I don't know what has motivated her, what was the motivating force behind her to change her outlook on the question of penal reforms.

SHRIMATI SAVITRY DEVI NIGAM: If you had heard properly then you would not have made such remarks because I have myself told why I have brought this though I am not in favour of penal administration at all

SHRI P. T LEUVA: Fortunately or unfortunately I was present in this House when the hon. Mover was making her introductory speech It may be that I may not have been able to follow her too Sanskritised Hindi and that it is possible that I might have misunderstood her but surely I have not misunderstood her earlier speeches which she delivered on the question of penal reforms and if I remember aright, she also gave notice of one motion for the penal reform as well as capital punishment. Now what are these offences against which she has spoken so vehemently. My friend Shri Amolakh Chand has taken so much trouble to find out the relevant sections of the Penal Code to show to the House that the offences to which she is making reference are already on the statute Book. Of course she has done one good thing—she has created chaos, she has created confusion where there is clarity and stability. So far as the Penal Code is concerned, the offences are defined very precisely and nobody can make any mistake about them but if you read her present Bill, you will find persons being proposed punished for the most innocent things in life. It would depend upon the caprice of an individual. My hon. friend sitting behind me is referring to an instance that if a person by chance stares at a woman, that might come under the present definition as given in the Bill as 'indecent behaviour'. I don't wish to deal with this measure with any sort of ridicule. I do realise the importance of the problem and I do feel that as there are lowering of standards in this country so far as the younger generation is concerned, we should take measures to morally re-arm them, if I am permitted to use the word which is so dear to the Mover of this Bill.

Now so much has been said regarding the deeds and misdeeds of men. Obviously this measure is directed against men. Formerly the complaint of the women used to be that the laws which were passed in the older generations were heavily weighted against women because they were passed by men. I thought the hon. Mover would at least give justice to us even though we might have denied justice to them but this Bill has been only directed against men and as other Members have pointed out, molestation is not now a one-way traffic. The only justification that has been shown for this measure is that higher punishment is necessary in order to curb or prevent the commission of crimes. Has the Mover satisfied this House that the evil has reached such proportions that unless stringent measures of a penal nature are taken, you cannot improve the society? As was pointed out, the offences of the Indian Penal Code were framed many generations back. Lord Mecaulay when he framed the I.P.C. might have got social conditions then existing before him. Are we really convinced that since the days of Mecaulay we have

[Shri P. T. Leuva.]

become degenerated, we have become so immoral and the evil has assumed such proportions that the society cannot last or that there would be no peace and happiness in this country unless you are to put down crimes with a heavy hand? There is no evidence before us. As has been rightly pointed out by Shrimati Yashoda Reddy, the only purpose which has been served by this legislation is that the world over it will be broadcast that the persons of this land of Gandhi and Ashoka, Mahavira and Buddha, those persons who taught the world morality, had taught or preached principles of justice and equity, have become so immoral or so degraded that they require their penal laws amended in such a manner that the slightest indiscretion, which might be due to a momentary impluse, has to be punished with 15 years in a jail with rigorous imprisonment in the bargain.

Now, before we give notice of legislation, it is the duty of every Member to consider very carefully whether the legislation that is being put forward is necessary for the purpose of warding off the evil. It is one of the recognised principles of legislation that you should not provide a punishment which itself is an evil which is greater than the one which you want to ward off. What is the evil here that has been pointed out which was not legislated against earlier. I personally believe that instead of wasting our time and energy on moving such measures in Parliament, the society would be benefited much better and our life would be happier indeed if the so-called social reformers and enthusiasts for reforming the society bend their energies to educate the masses of this country. Really speaking the problem which has been referred to in this measure is confined to cities. This problem is not affecting the villages and if the social reformers take upon themselves the responsibility of educating the younger generation there would be better results.

One thing I am glad to note is that the Government of India has come to one fine conclusion that the Social Welfare of this country can only be carried out and completed by the women of India. You will notice that from the composition of the Central Social Welfare Board that women have got the monopoly of social welfare. It passes my comprehension then why women should come to this Parliament and seek the assistance of law. They have been given the monopoly for social welfare. Sometimes I am inclined to say that this is not Social Welfare Board but it is Women's Welfare Board. I would therefore request the hon. Mover to exercise her energies to persuade the Central Social Welfare Board to take up this task instead of asking this House to pass this measure.

With these few words I request the Mover that in future she might exercise discretion a little bit carefully before putting forward any legislation in this House.

THE DEPUTY MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRIMATI VIOLET ALVA): Mr. Deputy Chairman, an identical measure of this type was sponsored in the other House just a week or two ago and was rejected by that House. But Shrimati Savitry Devi Nigam does not yield easily and she still feels that she can convert at least the Upper House Members to the right path and to her views. However, it is pleasing to note speaker after speaker in this House, though accepting the motive behind this Bill, the good intentions, saying that they have not been convinced sufficiently to accept the measure.

Shrimati Nigam has tried to devise a deterrent measure for the misbehaving male. As she has stated in the Statement of Objects and Reasons:

> "The Bill is intended to punish offenders who indulge in crimes against women. The punishment prescribed by the Indian Penal Code

is far from adequate. The Bill, therefore provides for a deterrent punishment with a view to check the increasing social menace."

As far as the "social menace" goes, Sir, we do admit that it may be growing in proportions in some places. But then what is the manner in which we are going to fight such a menace? The hon. Member Mr. Sapru said in his speech that if he went with a perverse-minded friend and if that friend whistled to a girl, then our Judge and legislator would find himself landed perhaps for fifteen years, and we would miss his advice in this House. I do not think that this measure is acceptable from any angle. It is the most unconvincing measure ever brought on the floor of this House. The very word "molestation" has to be defined. What is melestation? When we talk of molestation, we have to go down to fundamentals of human behaviour pattern and so, Sir, we shall have to digress from this measure to find out why these behaviour patterns go wrong in certain strata of society or in certain places or certain people. The guilty ones are the men who hover around the streets. But there are guilty ones among the fair sex also. Let us call ourselves the fair sex, but we shall never admit to be the weaker sex. We do not want to rob woman of her strength to stand up to a perverse man. It is for society to encourage and help woman to do this. Call them your mothers or sisters or sweet-hearts, call them by whatever name you like, whatever relationship you may have with a particular woman, it is for us to build a pattern in which these inhibitions do not prevail.

Industrialisation and urbanisation give a sharpened edge to this problem We come down, therefore, to the living conditions of men and women. In India, as some hon. Members have said we had a golden past where woman was the equal of man and in that age women have even surpassed men. Since then we should not forget that we have come to this present day, having marched over the recent decadent past. And it is for us to build up a society in which women shall walk the roads without fear. Where industrialisation and urbanisation grow, we have to see the problem from the socio-economic angle. The marriage-age is being pushed up and up. The problem of housing conditions stares us in the face. There are no amenities for recreation. Therefore, what follows? What follows is pornographic literature and advertisements, cinemas and the shop-windows which break down the resistance of our adolescents.

In any case this is a problem which has been engaging the attention of the State Governments and they are doing their utmost. I can speak of Bombay and I can speak of this place also. where flying squads and surprise squads are going round the streets and before educational institutions and other places where women gather together. Why? To stop this social menace. But if we accept Shrimati Nigam's measure, then I fear some of our hon. legislators may also find themselves in trouble and Shrimati Nigam herself will then begin to plead for them. But this is a drastic measure.

SHRIMATI SAVITRY DEVI NIGAM: But you can move some amendments to it and I am ready to accept them.

SHRIMATI VIOLET ALVA: I do not desire to move any amendment. I do desire to see and analyse this measure as you have placed it before the House. If you have any amendments, with the permission of the Chair, you may move them today or later.

Sir, the idea of penology has been undergoing changes in the last few decades. We have come to a stage when we are convinced and we believe that human beings cannot be cured by attending to the symptoms of the disease that they suffer from. We do not want to cure society of this disease of molestation by the symptoms alone. In that case, how is such a blanket provision as stated in this Bill, with all the offences lumped together, how is it going to be practi-

[Shrimati Violet Alva.]

cal at all in its application? Therefore, before I urge the hon. Member to withdraw this Bill, I shall go into the details.

In clause 2 there is reference to indecent behaviour. But what is indecent? Morality has changed from time to time and so has decency and indecency. There was a time when it was not considered decent for women to sit in legislatures, and by that standard we may say that it is indecent that we are now all together here. How do you define indecent? The Penal Code sections and provisions are ample, though they were framed in 1860 Sections 342, 354, 366, 366A, 366B and 366C should meet the wants of Shrimati Nigam. As the hon. Member Mr. Sapru said, the Evidence Act will stand in the way. Human passions and human behaviour cannot be regulated by human legislation unless you bring up your people to a level where they will not suffer from inhibitions. Cases of molestation will then be exceptions not a general rule. To bring up the society to that level, you do not need legislation of this nature. She goes on to say that imprisonment should extend up to fifteen years—what a monstrosity—and, not only that, that the fine should go up to Rs. 10,000. I do not know, in the present day, how many can afford to pay the maximum limit of the fine and the misbehaving male who has Rs. 10,000 in his pockets is not going to loiter in your streets. These are bare facts. Human passions have to be regulated by a proper social structure, especially in our industrial and urban colonies where people live. What we need today is less of cinemas and shop-window gazing, less of pornographic literature and bad advertisements; what we want is more and more of recreation, better housing. What Shrimati Nigam tries to do by this measure, to stop the molesting of women, can be done by providing better living facilities where you can bring more mirth and laughter into the lives of these men who have become misguided youths of society. You cannot do it otherwise by any measure. With the existing penal provisions we have not been able to achieve much, as Shrimati Nigam said; she said that we were not able to make out a convincing case for a conviction in a court of law. I do agree but do you think, Sir, that the hon. Member by this measure is going to get every man who molests a woman put in jail or get him fired. The same Evidence Act will be there as well as the same process of law by which, according to her, those who escape, shall continue to escape. The only way is to build up a social structure in which Shrimati Nigam has spent a lot of energy to bring mirth and laughter and recreation at the end of the day to every youth and every man and, may I say, to every woman, for, perversity is not the monopoly of man alone. This is how we should tackle this subject. We must keep the sense of values at the back of our minds in the new society, the sense of right and wrong. The first learning in the behaviour pattern is done in the family where you gather your first traits of character. The basic character is picked up in the family, in your educational institutions and then you step into society as equal partners. We have come to a stage in this country where every man and woman will brush shoulders together to build up a new India and in that Shrimati Nigam throws, what shall I say, a bombshell of fifteen years' imprisonment and a fine of Rs. 10,000. This infliction is against all principles of criminology and penology that is changing from day to day. We shall very soon be introducing in both the Houses of Parliament the Probation of Offenders' Bill wherein for offences graver than these, we shall analyse case by case and give them probation. At such a stage, the hon. Mover of the Bill steps in to impose a maximum prison term of fifteen years and a fine of Rs. 10,000. If a man molests or a woman seduces, then there is something wrong with the mind and the body. The mind and the body is an intricate mechanism and when you lack something in either of these two, you may go wrong and that is why right thinking men and women step out into society to work for the

amelioration not only of the labouring classes, not only those who are suffering because of economic backwardness, but even in high society. We shall have to find those who suffer from perversity and devise ways and means by which we shall achieve what Shrimati Nigam tries to achieve by this measure and which cannot be achieved by her measure that she propogates in this House.

Sir, with these few words, I would sincerely urge upon Shrimati Nigam to withdraw this measure.

श्रीमती सावित्री निगम : उपसभापति महोदय, मैंने इस बिल को मूव करते समय जो विचार प्रकट किये थे और अभी इस सम्बन्ध में जो बातें कही गई हैं उनको सुनने के बाद और विशेष रूप से डिपुटी होम मिनिस्टर महोदया के विचार सुनने के बाद मुझे प्रतीत होता है कि मैंने बिल मूव करते समय जो विचार प्रकट किये थे उन्हें शायद मुझे फिर से दोहराना पड़े। श्रीमन्, मैंने स्वयं अपने आप ही कहा था कि मैं न तो अपने को कोई लीगल एक्सपर्ट मानती हूं और न मैं इस बात का दावा करती हूं कि मुझे बिल ड्राफ्ट करने का एक्सपीरियंस है इसलिए मैंने बार बार प्रार्थना की थी कि जो भी संसद् सदस्य चाहें, जो भी अपने को दावेदार समझते हैं, इतना योग्य समझते हैं कि वे अच्छा बिल ड्राफ्ट कर सकते हैं, जो अपने को लीगल एक्सपर्ट मानते हैं, जिन्हें बिल ड्राफ्ट करने की योग्यता है, जिन्हें दम्भ है कि वे इससे अच्छा बिल ड्राफ्ट कर सकते हैं, उन सबको मैंने दावत दी थी कि इस बिल में अगर अमेन्डमेंट मूव करना चाहें तो कीजिये। उस समय उन लोगों को चाहिये था कि वे अमेन्डमेंट मूव करते। मैंने इस सम्बन्ध में जो कुछ भी बिल मूव किया है वह एक समाज सेविका के रूप में और अपने अनुभव के ख्याल से सदन में पेश किया था। मैंने अपने भाषण के पहले सेंटेंस में ही कह दिया था कि मुझे ड्राफ्टिंग करने का तजुर्बा नहीं है। डिपुटी मिनिस्टर महोदया के मुख से जो ये शब्द निकले "दिस इज़ दी वर्स्ट टाइप आफ मेज़र" इसकी मुझे उम्मीद नहीं थी। श्रीमन्, इस बिल में गलतियों के बावजूद भी अगर डिपुटी मिनिस्टर महोदया के हृदय में इन ट्रफिकियरिंग करने वालों के विरुद्ध कुछ भावना होती, अगर इन अभागिन बहिनों के लिये यदि उनके हृदय में सच्ची लगन होती कि समाज में जो यह कुरीति है वह चली जाये, तो उनको चाहिये था कि वे आगे आतीं। तब हम समझते कि उनका मोटिव क्या है, उनकी नीयत कितनी साफ़ है। अगर कोई भी माननीय सदस्य मेरे बिल में किसी तरह का कोई अमेन्डमेंड पेश करते तो मुझे कोई इंकार नहीं होता। अगर वे इस बिल को इफ़ैक्टिव मेज़र बनाने के लिए कोई क़दम उठाते तो मैं उस बात को समझती। लेकिन बिल को कंडैम कर देना कि यह ठीक नहीं है, इसे मैं सही रवैया नहीं समझती हूं।

श्रीमन्, मैंने बहस के दौरान देखा कि संसद् का आधे से अधिक समय इस बात पर न बिता कर कि इस समय देश में जो भयंकर कुरीति है उसको कैसे दूर किया जाय बल्कि इस बात पर बिताया गया कि इस बिल में यह खराबी है, वह खराबी है, इसमें ड्राफ्टिंग की मिस्टेक है, गोया कि कोई नया रिज़ोल्यूशन किया गया है। मैंने जब स्वयं इस बात का ज़िक्र किया है कि मैं विधेयक की ड्राफ्टिंग करने में दक्ष नहीं हूं, कुशल नहीं हूं, तब आपने एक अपमानजनक शब्द इस्तेमाल करके कहा कि यह बड़ा खराब बिल है, इस बिल को सदन में कभी नहीं लाना चाहिये था, इसमें बड़ी गलतियां हैं, इस बिल में क्या खूबियां हैं, क्या विशेषतायें हैं और कौन सा ओरीजिनल रिमार्क है। श्रीमन्, इस प्रकार के बड़े बड़े विचित्र आर्गूमेंट मुझे इस सम्बन्ध में सुनने को मिले।

श्रीमन्, किशन चन्द जी ने अभी एक सिख जैन्टलमैन का ज़िक्र किया कि वह किस तरह

[श्रीमती सावित्री निगम]

से मारा गया । उन्होंने उसके सम्बन्ध में तो पूरी बातें नहीं बतलाईं, लेकिन आर्गूमेंट से यह सिद्ध कर दिया कि वह किन हालतों में मारा गया । श्रीमन्, यह तो ऐसी बात हुई कि आप किसी किताब के दस पेज पढ़ें और एक पेज का एक सेंटेंस निकाल कर कोई बात सिद्ध कर दें । तो यह बात कहां तक सही है ? किशनचन्द जी को यह देखना चाहिये था कि किन कारणों से वह सिख मारा गया । "विद रेफरेंस टू दी कंटेक्स्ट" उसे देखना चाहिये था, नहीं तो बात उल्टी हो सकती है । श्रीमन्, बात असल में यह थी कि उस सिख भाई ने उस लड़की को जो मुसलमान थी डेढ़ हजार रुपये में खरीदा था जिसके पीछे वे मुसलमान बने थे । श्रीमन्, यही हाल होता है ट्रेफिकियरिंग करने वालों का । वे लोग इस तरह का जाल रचते हैं कि किसी को असलीयत का पता नहीं चलता है । श्री किशन चन्द जी ने एक तरफ की बात को देखा और असलियत पर ग़ौर नहीं किया । अगर उन्होंने असलियत पर ग़ौर किया होता तो उस व्यक्ति के साथ उनकी सहानुभूति नहीं होती । जो व्यक्ति इस तरह की खरीददारी करता है, जो इस तरह की बातों को पसंद करता है, जो ट्रेफिकियरिंग करने वालों का साथ देता है, उस आदमी का साथ कौन दे सकता है । श्रीमन्, स्त्रियों की निन्दा करना और इस सम्बन्ध में जो भाषण हुए उसके बारे में यह बतलाना चाहती हूं कि इसमें सदन की मनोवृत्ति क्या दिखाई देती है । श्री यशोदा जी ने तो बहुत लम्बी चौड़ी बातें हांकीं, मानो कि वे इंग्लैंड में रह रही हैं । अगर वे ज़मीन में रहती होतीं और अपने परिवार की दया पर निकली होतीं तो वे इस तरह का झूठा दम्भ नहीं भरती । हम यह कहें कि हमारे देश में सब महात्मा गांधी हैं, सब गौतम बुद्ध हैं, ऐसा कहने से तो सब इस तरह के नहीं बन जायेंगे । असलीयत तो किसी न किसी दिन सामने आयेगी ही । बजाय इसके कि हम बीमारी को आलोचनात्मक दृष्टि से देखें, हमें चाहिए कि हम उसका पता लगायें कि किस तरह से उसको दूर किया जा सकता है और अगर इस नीयत से हम उस पर विचार करें तो यह कहना कि हम देश को लेट डाउन करते हैं, यह तो ठीक नहीं है । जितना देश उनको प्यारा है उतना सबको प्यारा हो सकता है । देश और देशवासियों पर मुझको भी उतना ही गर्व है । लेकिन जो हमारी अपनी कमज़ोरी है, जो अपने देशवासियों की कमज़ोरी है, उसकी यदि हम चर्चा न करें इसलिए कि वह बुरी बात है तो हमारे बराबर अपने को धोखा देने वाला और कोई नहीं होगा । बहुत दिन हम पास्ट ग्लोरी में रह चुके हैं और एक ऐसा हिपोक्रिटिक वातावरण बन गया है कि हर स्त्री और हर पुरुष यहां तक कि बड़े से बड़ा ट्रैफ़िकर भी यह दिखलाता है कि मेरे जैसा उच्च चरित्र वाला कोई नहीं है । लेकिन चेहरे और सफ़ेद कपड़ों के भीतर जो बातें छिपी रहती हैं उनका अन्दाज़ लगाना भी एक बहुत बुद्धिमानी की बात है ।

इसी प्रकार श्री किशन चन्द जी ने कहा कि धर्म पर क्यों मिसेज़ निगम ने चोट पहुंचाई । मैं यह पूछना चाहती हूं कि क्या धर्म उनकी अपनी सम्पत्ति है । मैं दावे के साथ कहती हूं कि धर्म मुझे उनसे कम प्यारा नहीं है बल्कि कुछ अधिक ही प्यारा है । मैंने अगर हिन्दू धर्म के बारे में कुछ कहा है तो आप यह समझ लें कि मुझे यह बात कहने में उतना ही अफ़सोस हुआ है जितना कि अपनी कमज़ोरी बताने में होता है क्योंकि मैं एक सच्ची हिन्दू हूं । असली मक़सद और असली उद्देश्य को खो कर हम इसमें पड़ जाते हैं कि किसने क्या कहा । बजाय इसके कि What is right ? Who is right ? में हम लोग पहुंच जाते हैं और उसका नतीजा यह होता है कि हम अपने उद्देश्य को बहुत पीछे छोड़ देते हैं ।

सप्रू साहब ने अगर मेरा विचार जरा भी गौर से सुना होता तो वे वैसी आलोचना नहीं करते जैसी उन्होंने की है । लेकिन

जिस प्रकार की आलोचना उन्होंने की वह इस बात का सबूत है कि हमारे देश में इतने जिम्मेदार, इतने समझदार और इतने प्रसिद्ध लोग भी इस तरह की मनोवृत्ति रखते है और यह देश के लिए बहुत ही भयानक और दुर्भाग्यपूर्ण बात है। सच मानिये कि अगर इस प्रकार की अपमानजनक बातें न कही गई होतीं तो इस बिल के विरोध में किसी भी बात को सुन कर मुझे दुख नही होता। आप यह समझ लें कि मेरे अपमान में या मेरी आलोचना में जो भी शब्द कहे गये हैं, उसे मै अपना अपमान रत्ती भर भी नही समझती हूं क्योंकि मै काफी टफ स्किन्ड हो गई हूं। मै जानती हूं कि समाज में कोई ऐसा नया काम करने के लिए जो लोग आगे बढ़ते है उनको इस प्रकार की आलोचना के लिए तैयार रहना चाहिये। उन्होंने जो अपमान किया है वह अपमान उन्होंने पूरी नारी जाति का किया है। आप यह देखिये कि डिप्टी मिनिस्टर ने भी उसको सपोर्ट किया जो सप्रू साहब ने कहा। इससे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा कि अगर मैं जाता हूं और कोई परवर्टेड माइंडेड आदमी मेरे साथ हो और वह व्हिसिल कर दे तो वे खुद फंस जायेंगे और १५ साल के लिए जेल चले जायेंगे। मै बड़े अदब के साथ कहना चाहती हूं कि जो १५ साल की सजा या दस हजार रुपये का जुर्माना है वह व्हिसिल बजाने वालों के लिए नहीं है। मैंने शुरू में कहा था कि वह ट्रैफिकर्स के लिए है। इसके अतिरिक्त हर जज की अपनी बुद्धि होती है, अपना डिस्क्रेसन होता है।

SHRIMATI VIOLET ALVA: May I interrupt for a moment and say that we have got the Suppression of Immoral Traffic in Women and Girls Act?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You missed one point. Nobody denies that there are such offences committed here in India or elsewhere. But everyone of these offences is covered by some particular section or other in the Penl Code; it is already there. But what you are trying to do is to club them all together in one section and give one sentence, fifteen years' imprisonment or ten thousand rupees fine. That is what you are trying to do, to which they have objected. They say that each particular section in the Penal Code should be amended. That is the proper procedure to adopt. But what you are trying to do is club them all together in one section. That the House is not prepared to accept.

श्रीमती सावित्री निगम : मैंने विधेयक मूव करते समय स्वयं ही पेनल कोड की चर्चा की थी। वह जो Trafficking in Women and Children Bill उसके बारे में भी मैंने अपने विचार प्रकट किये थे। मैने बहुत सी जीती जागती मिसालें भी पेश की थी जब कि ढाई सौ लड़कियां ब्राथल से निकाली गई थी तो जो माइनर गर्ल्स जिन ट्रैफिकर्स के घरों से निकाली गई थीं उनमें से किसी को पांच सौ रुपये की जुर्माने की सजा हुई और किसी को एक महीने की सजा हुई। मैंने यह भी कहा था कि मै पैनल ऐडमिनिस्ट्रेशन के बिलकुल खिलाफ हूं और मै कैपिटल पनिशमेंट के भी खिलाफ हूं। मैंने यह भी कहा था कि मै नहीं चाहती कि आज जो हमारा प्रिजेंट ऐडमिनिस्ट्रेशन पर इतना रुपया खर्च हो रहा है वह इस तरह वेस्ट हो। मैं यह चाहती हूं कि हमारे यहां करेक्शनल इंस्टिट्यूशंस, सुधार घर बनाये जायं। लेकिन जब तक हम पैनल ऐडमिनिस्ट्रेशन को बनाये हुये हैं, तब तक के लिए मैंने सोचा कि ऐसे बिल की आवश्यकता है क्योंकि ऐसे, औफेंसेज को लोग बहुत लाइटली लेते है। आज जैसा वातावरण आपने यहां देखा उससे पता चल गया होगा कि जिस मनोवृत्ति का आज यहां पर प्रदर्शन हुआ वही मनोवृत्ति घर में काम करती है, उसी

[श्रीमती सावित्री निगम]

मनोवृत्ति से हमारे यहां जजमेंट होते हैं, उसी मनोवृत्ति से हमारे पुलिस ऑफिसर गाइड होते हैं। उसी मनोवृत्ति से लोगों ने कहा कि वन साइडेड ट्रैफिक नहीं है, दोनों साइड का ट्रैफिक है। श्रीमन्, यदि कोई आर्मचेयर पालिटीशियन समाज में उतर कर देखे तो उसको पता चल जायगा कि स्त्रियों की कैसी दशा है। श्रीमती रेड्डी के मुंह से जो मैंने सुना उस पर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। उनको अपनी पवित्रता पर बड़ा दंभ है, उनको अपने साहस पर बड़ा गर्व है, लेकिन मैं उनको दावे के साथ बताना चाहती हूं कि आज भी सैकड़ों ऐसी स्त्रियां ब्राथल्स में मौजूद हैं जिनको अपनी पवित्रता उतनी ही प्यारी है जितनी पवित्रता उनको प्यारी है। यह पवित्रता सौभाग्य से होती है। मैं सौभाग्वयवती हूं, इसलिए मैं अपनी पवित्रता का दंभ भर सकती हूं।

SHRI P. N. SAPRU: On a point of order.

SHRIMATI SAVITRY DEVI NIGAM: I am not going to yield.

SHRI P. N. SAPRU: On a point of order. Is it permissible for Mrs. Savitry Nigam to attack Mrs. Yashoda Reddy?

श्रीमती सावित्री निगम : मैं यह दावे के साथ बताना चाहती हूं कि यह पवित्रता सौभाग्य से मिलने वाली वस्तु है।

SHRIMATI YASHODA REDDY: When she is referring to me, I would like it to be in English.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: She wants to understand you.

SHRIMATI SAVITRY DEVI NIGAM: Let me speak as I am speaking. She can read my speech.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: She cannot understand Hindi. How can she read it?

SHRI H. N. KUNZRU: Mrs. Yashoda Reddy understands Hindi very well.

श्रीमती सावित्री निगम : मैं बड़े अदब के साथ कहना चाहती हूं कि वे अभागिन स्त्रियां जो आज अपवित्रता के चंगुल में फंसी हुई हैं उनमें किसी प्रकार के साहस की कमी नहीं है। मैं सबको नहीं कहती, फिर भी उनमें एक बड़ी तादाद ऐसी है जिनमें साहस की भी कमी नहीं है और जिनको पवित्रता बेहद प्यारी है, अपनी जान से ज्यादा प्यारी है, लेकिन मजबूरियों ने और दुर्भाग्य ने उनको ऐसा चंगुल में जकड़ रखा है कि वे पतन के गर्त में गिरने के लिए मजबूर हैं। इसलिए मैं चाहती हूं कि जो सच्चाई है, जो वास्तविकता है उसको आप देखें। जी० बी० रोड में तमाम ऐसी पतित बहनें पड़ी हुई हैं। मैं स्वयं वहां गई थी और बहनों से मिली थी। यदि किसी ने उनकी करुण गाथा या उनकी असली हालत जानने या समझने की कोशिश की होती तो पता चल जाता कि पवित्रता का दम्भ भरने वाले लोग उन अपवित्र होते हुए भी पवित्र आत्माओं के संकट का अनुमान स्वप्न में भी नहीं लगा सकते। हम सम्भ्रान्त और कुलीन परिवार की स्त्रियां अपनी पवित्रता और अपने उच्च जीवन के लिये अपने प्राण तक न्यौछावर करना चाहती हैं, ठीक उसी प्रकार वे स्त्रियां भी छटपटा रही हैं और चाहती हैं कि किसी तरह उनको भी सम्मानित जीवन प्राप्त हो, मान प्राप्त हो और एक गृहिणी का सुख और आनन्द प्राप्त हो। वे भी चाहती हैं कि एक ही घर में उनके फ्यूचर की सिक्योरिटी हो। वे भी चाहती हैं कि उनका अपना एक सुखद संसार हो लेकिन ऐसी ही मनोवृत्ति के लोग जो कि समझते हैं कि स्त्रियां अपने आप ही गिरी हुई हैं या गिर जाती हैं या गिरना पसन्द करती हैं और केवल बहादुर स्त्रियां, हमारे तरह की स्त्रियां.....

SHRI B. B. SHARMA (Uttar Pradesh): I rise in protest, Sir, on a point of order. She is saying "जो लोग पवित्रता का ढोंग भरते हैं, यहां जो लोग बैठे हुए हैं वे पवित्रता के ढोंगभरते हैं।" आपका कहना यह है कि यह पर जो लोग भाषण दे रहे हैं वे लोग पवित्रता के ढोंग भरते हैं।

SHRIMATI SAVITRY DEVI NIGAM: There is no point of order.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Order, order. What is the point of order you are raising?

SHRI B. B. SHARMA: I am raising this point of order. She is making an allegation against the general mass of manhood, which she is not entitled to do, against the Members of this House.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Order, order.

श्रीमती सावित्री निगम : श्रीमान्, अच्छा होता कि हम लोग यह देखते कि इस, विधेयक की समाज में आवश्यकता है या नहीं, अच्छा होता कि हम लोग इस बात पर गौर करते। मिस्टर लेउवा ने कहा कि मासेज को एजुकेट करने की जरूरत है। मैं बड़े अदब से कहना चाहती हूँ कि मासेज को एजुकेट करने के लिये पूरा काम हो रहा है और मैं यह कहना चाहती हूं कि मासेज को उतना एजुकेट करने की आवश्यकता नहीं है जितना कि क्लासेज को एजुकेट करने की जरूरत है। मैंने पहले ही कहा था कि यह ईविल शहरों में ज्यादा है और मासेज तो गांवों में रहते हैं और मासेज काफी एजुकेटेड है। इस प्रकार की प्रवृत्तियां भी उनमें नहीं हैं और उनके समाज में गुंडागर्दी भी नहीं के बराबर है लेकिन ये क्लासेज हैं जिनको कि एजुकेट करना है, जो कि शहरों में रहते हैं और जहां कि—जैसा कि मैंने कहा—तरह तरह के सिनेमा हैं, हॉरर कामिक्स हैं...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is what exactly Mrs. Alva and Mr. Leuva all of them said.

श्रीमती सावित्री निगम : मैं फिर से विनम्रतापूर्वक यह कहना चाहती हूँ कि मैंने जो इसमें कठोर दंड रखा है वह—जैसा कि एक मेम्बर साहब ने और अन्य सदस्यों ने पूछा—व्हिसिल बजाने वालों के लिये नहीं है। मैंने एक अमेंडमेंट को मूव करने के लिये भी नोटिस दिया है। पता नहीं कि वह डिसक्स किया जायगा या नहीं लेकिन मैं यहां उसकी चर्चा करना चाहती हूँ। वह अमेंडमेंट इस बारे में है कि ऐसे मामलों को, ऐसे केसेज को डिसाइड करने का जो प्रोसीजर हो वह लम्बा न हो और समरी ट्रायल्स में ही, जैसे ही ऐसे नाजायज काम करते हुए पकड़े जायें वैसे ही उनका तुरन्त फैसला करके उनके ऊपर जुर्माना या सजा कर दी जाय ताकि इसका लम्बा प्रोसीजर न हो और लोगों को कठिनाई न हो।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: All that will have to be provided for in the Bill, but you have not done it.

SHRIMATI SAVITRY DEVI NIGAM: I have given notice of the amendment.

दूसरी बात मैं यह कहना चाहती हूँ कि अगर ऐसे केसेज की प्रोसीडिंग्स कैमरे में हुआ करे तो बहुत अच्छा रहेगा। ये दोनों बातें मैंने जो अमेंडमेंट की नोटिस दी है उसमें कही है।

इसके अतिरिक्त बस एक बात और कह कर मैं समाप्त करना चाहती हूं और वह यह है कि जब कभी भी ऐसे मेजर्स—जैसा कि यह है या इसी से सम्बन्धित गुंडागर्दी, ट्रैफिकिंग या मेलेस्टेशन के केसेज को दूर करने के लिये कम करने के लिये—सदन में लाये जायें तो आवश्यकता इस बात की

[श्रीमती सावित्री निगम]

है कि हम लोग भी उस समय अधिक संयम से काम लें और इसके अतिरिक्त जो हमारी होम मिनिस्टर महोदया हैं उनसे यह निवेदन करना चाहती हूँ कि वह एक प्रकार से अधिक उदारता और एक दया की भावना उन अभागिनी बहनों के प्रति रखें जिनकी कि रक्षा करने की, जिनका उद्धार करने की और जिनको पतन के गर्त से निकालने की जिम्मेदारी उतनी ही उनकी है जितनी कि हम सबों की है। धन्यवाद, श्रीमान्।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I am putting the motion to the vote of the House.

The question is:

"That the Bill to provide for punishment of persons guilty of molesting women be taken into consideration."

SHRIMATI SAVITRY DEVI NIGAM: Sir, I want to withdraw this Bill.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: But you did not say that.

SHRI KISHEN CHAND: We discussed the whole day this Bill. I do not suppose that leave should be granted to withdraw the Bill.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: So, I have to put it to the House even if there is one objection.

SHRI DEOKINANDAN NARAYAN (Bombay): You have already put it to vote. How can it be withdrawn?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The question is:

"That the Bill to provide for punishment of persons guilty of molesting women be taken into consideration."

The motion was negatived.

THE BUDGET (GENERAL), 1958-59—GENERAL DISCUSSION—*contd.*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shall we take up the Budget debate?

(*No hon. Member dissented.*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Vijaivargiya.

SHRI GOPIKRISHNA VIJAIVARGIYA (Madhya Pradesh): Mr. Deputy Chairman, we are now taking up the budget. Our Prime Minister, who is also functioning as the Finance Minister for the budget, has called this budget a pedestrian budget. His contact with the Finance Department has been very short and for a few weeks only and I think he could not give sufficient time and attention to finances. My opinion is that if he would have got more time and would have given more thought and had more control over the finances, then he he has the capacity and he could have produced even a *sputnik* budget in this *sputnik* age, although this is only a pedestrian budget. In fact, I believe that to go towards socialism we require more speed and greater progress. The features of this Bill are very clear. In the current year we will have a surplus of Rs. 5 crores, but in the coming year we will have a deficit of Rs. 27 crores. Our expenses out of the revenues are going to be Rs. 796 crores and income will be Rs. 763 crores. The new taxes, in fact, are a corollary of the tax structure we have accepted last year. Gift tax is a welcome feature. So, are the other amendments to the taxes. The new tax structure is sometimes opposed by some sections, particularly capitalistic sections of the country and there are some forums like the private enterprise forum, etc. They have opposed. But I want to say that even last year this tax structure was generally welcomed by the whole of our country. That tax structure itself had created a great enthusiasm amongst the whole population because it made socialism possible in our country. Without just distribution of the